

१०१५८०

प्रगल्भकर्ता
श्री जैनधर्म प्रसारक
सच्चा.
जावनगर.

डॉ. कविशिक्षा अपरनाम गणपतिपिकासमीर.

किंमत आठ आना
संवत् १९४८
अमदावाद युनिवर्सिटी
प्रीन्टींग प्रेस

१०१५८०

10/1/2012

प्रगल्भकर्ता
श्री जैनधर्म प्रसारक
सन्ना.
जावनगर.

उदकहितशिक्षा अपरनाम गापदिपिकासमीर.

किंमत आठ आना
संवत् १९४८
अमदावाद युनियन
प्रीन्टींग प्रेस

10/1/2012

हुंठक हिताशिक्षा.

अपरनाम

गप्प दीपिका समीर.

(हुंठकमणि आर्या पार्वतीकी वनावेली ज्ञान दीपिका—वास्तविक गप्प दीपिकाका खंमन)

विदित हो के इम हुंमावसर्पिण कालमें बहुत बातें आश्चर्यकारी हो गइ हैं, और होती चली जाती हैं. तिनमेंमे एक यहूजी बात सुइजनो के हृदयमें आश्चर्यजनक हैकि स्त्रियांजी पुरुषोंकी सजामें बैठके व्याख्यान करती हैं. और प्रश्नोत्तर रूप खंमन खंमनकी पुस्तकेंजी रचती हैं. जैसे पार्वतीनामा हुंठकणीने ज्ञान दीपिकानामे पुस्तक रचा है. आश्चर्य तो यह हैकि जैनशासनमें हजारो साधवीयां हो गइ हैं परंकिमी साधवीका रचा हुआ कोई पुस्तक वांचने और सुननेमें नहीं आया है. तथा श्री महावीरस्वामीकी उत्तीम हजार साधवीयांथी, उनमेंसें अनेक साधवीयांनें अनेक प्रकारके तप करे है तथा एकादशांग शास्त्र पढ़े है परं किमी साधवीने पुस्तक नहीं रचा है; और न पुरुषोंकी सजामें बैठके धर्मोपदेश करा है. क्योंकि श्री नंदीजीसूत्रमें ऐसा पाठ हैकि जिस तीर्थकरके शासनमें जिनने गिप्प चार प्रकारकी बुद्धि करके सहित होवे तिस तीर्थकरके शासनमें तितने हजार वा लाख भकीएक शास्त्र होने है. परं साधवीयोंके रचे शास्त्र किसी शास्त्र-

येंजी नहीं कथन करे है. जैनमतके विना अन्य मतोंमें हमने नहीं सुना हैकि स्त्रीका रचा अमुक शास्त्र है, वा अमुक स्त्रीने पुरुषोंकी सज्जामें व्याख्यान करा, वा स्त्रीकों पुषोंकी सज्जामें व्याख्यान करनेकी आज्ञा है. अब पाठकजनो! विचार करना चाहियेकि पार्वती दुंदकणीने पुस्तक रचा है सो जैनमतके शास्त्रकी आज्ञासे रचा है तब तो शास्त्रका पाठ दिखलाना चाहिये; जेकर शास्त्रव्याज्ञामें विनाही रचा है तब तो शास्त्राज्ञाके जंग करने प्रायश्चित लेना चाहिये. जेकर पार्वती दुंदकणीने ऐसा विचार करा होवेगाकि 'जगवंतकी आज्ञा जंग करणरूप उपाय मेरेकों लगा तो क्या हुआ मेरी पंमिताइ तो दुंदक लोकमें प्रगट हो गई' परंतु ऐसा विचार बुद्धिमानोकातो नहीं है.

पूर्वपक्ष-क्या अमरसिंह दुंदकके समुदायमें कोई पुस्तक रचने योग्य दुंदक साधु नहीं था जिस्से पार्वती दुंदकणीकों ज्ञान दीपिका पुस्तक रचना पमा?

उत्तर-यह तो माननाही पमेगाकि अमरसिंहका कंठमें इज्जी चला पुस्तक रचने सामर्थ्य नहींथा तबहीतो स्त्री उचर्यात पार्वती दुंदकणीकों पुस्तक रचना पमा.

प्रश्न-पार्वतीने जो पुस्तक रचा हैसो अज्ञा काम कहे जायें वा नहीं?

उत्तर-जैनशास्त्रानुसार तो यह काम अज्ञा नहीं करा है. प्रश्न-दुंदक साधु श्रावकोंने पार्वतीकों पुस्तक रचने पमा क्यों नहीं करा क्या उन लोकोंका यह मथर नहीं थी के शास्त्रमें किमी स्त्रीका रचा पुस्तक नहीं चला है.

उत्तर-वे विचार तो शास्त्र अज्ञातरसें पढे मुनेही नदें. उता फेर वे पमा करनेमें सामर्थ्य कैमें होंगे. जेकर वे प

दृष्ट है तां वेही वतला देवे के अमुक जैनमतके शास्त्रमें स्त्रीकों पुस्तक रचना और पुरुषोंकी मन्त्रमें व्याख्यान करना चला है.

मश्र-दुंडक साधु श्रावकनों बहुत आनंदित हुएहैं के हमारी पार्वतीने कैसी अच्छी ज्ञान दीपिका रची है.

उत्तर-ये सबे जैनशास्त्रोंके अनभिज्ञ हैं. इस वास्ते परस्पर श्लाघा करते हैं. किसी कविने यह श्लोकजी कहाहैं.

उप्राणां विवाहेतु गर्दना वेद पाठकाः ।
परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूप महोध्वनिः॥

मश्र-ज्ञान दीपिकाके उपर यह लिखा दूया हैकि "बाल ब्रह्मचारी श्रीमती पार्वती" सो यह लेख ठीक है वा नहीं ?

उत्तर-हे जन्य ! हमकों किसीके गुणोंमें शर्पा नहीं हैकि हम जीवमें यह गुण क्यों दूया. परंतु मन्यगुण होगा तब हम उनके गुणकों धन्यवाद कहेंगे. क्योंकि ये पार्वती मश्रम जिन दुंडक दुंडकणीकी शिष्याणीथी तिनमें जैमासाधुपणा अथवा ब्रह्मचर्य वा बाल ब्रह्मचर्यथा नोनो आगरके बहुत लोक जानतेहैं क्योंकि जैन तत्त्वादर्शके रचने वाले हमारे गुरुमहाराजनेजी संवत् १७२० की सालका चतुर्मास आगरमेंही करा था. इस वास्ते पार्वतीके गुरु वा गुरुणीके स्वरूपकों अच्छीतरसे जानते हैं. उनमें रहके तथा उनकों गोमके कितनेक दिनोंतक एकजी रहके हमने बाल ब्रह्मचर्य पाला सोवेगा ना हम इसके बाल ब्रह्मचर्यकोंजी धन्यवाद देने हैं. क्योंकि अपने अपने गुण अथगुण सबकों मान्य सोते हैं. किसीके कहने वा लिपनेसे किसीके

गुण अवगुण जाते आते नहीं है. हगनां सर्व ब्रह्मचारी
 बाल ब्रह्मचारीयोंके गुणाके यशवाद बोलने वाले हैं. परं
 स्त्रीकों “बाल ब्रह्मचारी” ऐसा लेख जिसने लिखा व
 लिखवाया उपवाया होगा वोतो बमाही मूर्ख होवेगा
 क्योंकि स्त्रीको पुरुष लिखना अयुक्त है. ‘बाल ब्रह्मचारी’
 तो पुरुषकों लिखा जाता है. स्त्रीकों तो ‘बाल ब्रह्मचारिणी’
 ऐसा लिखना सम्मत है, इम वास्ते “आंधे चूहे थोथे
 धान, जैसे गुरु तैसे यजमान;” यह कहना ठीक हो गया.

प्रश्न-पार्वती हुंढकणीको तो हुंढक लोक बनी पंमि-
 तानि मानते है तो फेर पार्वती हुंढकणीने ‘ब्रह्मचारी’ श-
 व्दकों सुधारा क्यों नहीं होवेगा ?

उत्तर-जेकर पार्वतीमे इतनी बुद्धि होती तो सुधारा
 करती परंतु पार्वतीकी रची पुस्तकके सुधारने वाले पंमि-
 तानिबुद्धिनी निर्मल नहींथी नहीं तो थोमेसे लो-
 जके वास्ते स्त्रीकी रची महा अशुद्ध पुस्तकके सुधारनेसे
 अपनी बुद्धिको कलंकित न करता.

प्रश्न-पार्वती हुंढकणीने जो ज्ञानदीपिका रची है ति-
 समे कितनीक वार्ते जैनतत्वादर्श ग्रंथकी लेके दाखल करी
 है ऐसा मालुम होता है तो फेर पार्वतीने जैनतत्वादर्शका
 और तिसके कर्त्ताका अपमान किस वास्ते करा है ?

उत्तर-उक्त ग्रंथके कर्त्ताने तो सज्जानोंके उपकार :
 स्ते ग्रंथ रचा है परंतु कृतग्रीजन तो उपकार नहीं मा-
 है. यह उनकी प्रकृतिका सजावही है. जैसे वृषित महि
 मरोवरमेंसे निर्मल पानी पीके उस सरोवरमे मूते बि-
 नहीं रहती है. तैसेही छर्जनोका सजाव है. इस बात
 किमी पंमितने श्लोकनी लिखा है.

विना पराप वादेन नतृप्यते उर्जनो जनः।
काकःसर्वरसान्भुंक्त्वा विना मेध्यं नतृप्यति।

यह पार्वती शब्दज्ञान अर्थात् संस्कृत माकृत के व्यकरणके बोधमें रहित है तो फेर इस विचारीको शास्त्र बोध कैसे होवे? और विना बोधके लोकोंके धाम जो मन आवे मो स्वकपोल कल्पित कहती फिरती है और अगमग, लेकिनादि शब्द लिखके एक पोथी बनाइ है. कि सका नाम "ज्ञान-दीपिका-जैनोद्योत" रख्या है. ज्यों कि इस ज्ञान दीपिका रचनेमें पहिले दुंदक लोक यके अंग काममें फिरने होंगे. इस जैनोद्योतमें उन विचारोंको दर्शाने लगा है इस हेतुमें पार्वती दुंदक लोकोंका तो परीक्षणी है परंतु इनने जो जिनाज्ञाका जंगम्य पुस्तक रचाइ इस पापमें इस विचारीको क्या आपत्तियें होवेगी और इसको उद्योत कान करेगा यह तो हम नहीं जानते है.

प्रथम-पार्वतीने तो अपनी रची ज्ञान दीपिकामें संस्कृत माकृत श्लोक और 'तग्मात कारणात्' 'इत्यर्थ' 'इति हेम' 'अग्मात कारणात्' 'पूर्वक' इत्यादिक अनेक संस्कृत शब्द लिखे है तो फेर पार्वती संस्कृतान्तिककी जानकार क्यों नहीं

उत्तर जैसे किमी ब्राह्मणने अपना जूना गठवानाश्र इस वास्ते परमकारीको कहता है "हे चर्मणि चर्मन कुप्र गतः" तब चर्मकारी कहती है "बाहिरों उरिमें नगगत" जैसी यह संस्कृत है ऐसीही पार्वती दुंदकणीकी लिखी हुई संस्कृत है. जब ए विचारी कदाचित् मारस्तान व्याकरण एमात्रनी अर्थीनरेके पर जावेगी तब अपनी रची ज्ञान दीपिका यांनके मनमें पक्षात्ताप करेगी के मे मूर्खणीने म-

दोन्धर लोके वीमे लक्ष्मण नीम भद्र शब्द खानी मूर्तिप-
दमे लिख शरिणे. नैकर संस्कृत नली पलेगी तोनी रूपे
मोर्त-स्युक्त एक लिखे. नै मर्व विद्वज्जन देखेगे तस
दुःखकर करेने

दुःख-दुःखेरी संस्कृती जेकर संस्कृत पाठ्याके अर्तोपे
लिखे करे. जेकरा ने लोका लागी सुख विधाने तो या
दुःख-मोक्ष-

मोक्ष-मोक्षेरी संस्कृती जेकर संस्कृत पाठ्याके अर्तोपे
लिखे करे. जेकरा ने लोका लागी सुख विधाने तो या
दुःख-मोक्ष-

प्रवाल कवरमेन नामका बनियाथा. उसने मनोहरदासके
 टोलेके रत्नचंद्रजीके पास दीक्षा लीनीथी परंतु कवरमेन
 रत्नचंद्रकी आज्ञा प्रमाण नहीं चलताथा. इम वास्ते र-
 तनचंद्रजीने उमकों अपनी समुदायसे अलग कर रखाथा.
 कवरमेन बहुत करके आगरमें रहनाथा. बालुगंजमें उमकी
 किननीक उकानेजीथी. और कवरमेन मालदारजीथा.
 तिमने मिहौरा गाममें बुले जावमेकी बेटी विधवा हीरां-
 को जिसतरमें तहांसे ले गयाथा सो वृत्तांत सिहारेके लोक
 मर्ब जानते है. आगरमें दुंडकणीके वेषमें हीरां रहेतीथी
 कवरमेन और हीरांका जेसा आचार व्यवहारथा सो मर्ब
 आगरके श्रावक जानते है. संवत् १९२० में श्री आत्माराम-
 जीने दुंडकपनेमें शाय्य पहने वास्ते श्री रत्नचंद्रजीके पास
 चौमासा आगरमें कराथा तिम अजमेरमें हीरां पंजाबी साधु
 जानकर कदे एकवार श्री आत्मारामजीके पास बंदना क-
 रनेकों आया करतीथी. तिम अजमेरमें रत्नचंद्रकी आ-
 य्यके पास बिना दीक्षा लीयां मोहनी १ सुंदरी २ जी-
 यो ३ डुरगी ४ बगरे छोटी उमरकी ठोकरीयांथी परंतु
 हीरांके पास पार्वती बिना दीक्षा लीयां उम बघनथी वा
 नहीथी यह निश्चय आत्मारामजीका नहीं है. परंतु जब य-
 मुनापार दोघट्ट गाममें संवत् १९२४ में श्री आत्मारामजी-
 का चेला नानकचंद्र और धनीगमका चेला गोर्धन और
 चतुरभुजजीका चेला जरताने पागमर बटिमें दीक्षा ली-
 नीथी तिम अजमेरमें हीरांके साथ यह पार्वती लगजग
 १४ वा १५ वर्षकी उमरमें गहने पहने हुए देखीगी. धां-
 केही दिन पीछे आज्ञाम गाममें चतुरभुजने जब अन्य ठोक-
 रीयांको दीक्षा दीनीथी तिनके साथही यह पार्वतीजी गुं-

मित हूँ। पीठे हीरां पार्वतीको साथ लेके सिद्धारे गा-
 ममें अपना मुख उजला करने वास्ते गइथी। पीठे हीरां
 और पार्वती आगरेमें गइथी। तीहां कवरसेन और कवर-
 सेनके चेले स्याममुखके साथ इसकी क्या जाने किस वा-
 तके वास्ते खटपट हूँ। यह तो इस पार्वतीकोही मालुम हो
 वेगी। तहांसे एकली रुसके ये निकलके कहां कहां रही
 और क्या क्या समाचारी साथी सोझी पार्वतीकोही मालुम
 है। पीठे लुहारे गाममें आइ तहां लुहारेके बच्चियोंने इसकी
 कितनीक वस्तुज ले लीनी। तद पीठे पार्वती अमरसिंहके
 टोलेमें आइ. संवत १९३० में जब श्री आत्मारामजीने स-
 हर अंजालेमें चतुर्मास कराया तब कवरसेनने श्री आत्मा
 रामजीको एक चिठी लिखीथी तिसमें ऐसा लिखाथा
 “अमरसिंहने मेरी चेली पार्वती ले लीनी है जेकर तुम मे
 शाहता करो क्योंकि तुम मेरे गुरूके पास पढेहो। इस वा-
 जव पादमीको ठीकज्ञानी होती है तब सूर्यके मनमुल देर
 गा है। जग नामे तुमारे साथी श्रावक पंजाबमें रहोतमें
 जेकर मे पादक मुजकों महायता करे तो मे पंजाबमें अ-
 दर महागामी कनेगीमें तथा अन्य प्रकाशमें अमरसिंह
 फीका करे। अपनी चेली ले लंगा” तब आत्मारामजी
 विचारके अकार में कवरसेनको महाय देचंगा तो वां पं-
 जाब में पादक बहुत अज धर्मही निंदा कगोया। इस वा-
 जव पीठे पीठे काव नहीं लिखाथा अब कवरसे-
 नके अक्षयसूरदास का मंग है और हीरां विवारी पार्वती
 के अक्षयसूरदास का मंग है। क्योंकि अक्षय अक्षय
 के अक्षयसूरदास का मंग है। अक्षयसूरदास के अक्षयसूरदास का
 मंग है अक्षयसूरदास का मंग है। अक्षयसूरदास का मंग है

हराकि लुहार गाममें हीरे हुंढीये श्रावककी पांतीकों ठाने निकलनाके पंजाबमें जेज दीनी. तिसके घरके यद्यपि ठोहरकीकों पीउे ले गये. तोजी तिमके गाममे मुकलावा नहीं लेनेथे. और लुहार गामके बनियोन हुंढकपंथ ठोरुके दिगंबर मंदिरमें पूजा करने लग गयेक. और पार्वतीकोतो पंजाबके हुंढकोने पंमितानीके चक्रपर चढा दइके. अथ इसकी रची पोथीमें इसका ज्ञापना कुछ बोलनी नहीं आतीहै इसबास्त ज्ञापना शुद्धाशुद्धके समझने वालेन इसकी ज्ञानदीपिका देख लेनी. अथर शुद्धाशुद्धका विस्तार लिपके फोगद प्रयास करनेकी जरूर नहींहै.

अथ पार्वतीकी पोथीका उत्तर लिखतेहै.

प्रथम ज्ञानदीपिका पोथीकी प्रस्तापनाके पृष्ठ ८ उत्तर पार्वती लिखतीहै "दीपकमें अनेक जीव दग्ध होकर साणंत होजातेहै, इस लिये दीपक समशानतुल्य होजातेहै."

उत्तर-इस लेखनं तो चारोवणोंके घर समशानतुल्य होगये. और गवे हलवाइयादिकी चठीयांजी समशानतुल्य हो गइयो, क्योंकि सबके घरमें दीपक, चुन्डे, तंडर इथके हारे आदिमें अनेक जीव पनके घर जातेहै, और ठाकुर-छारे शिवालंगेशादि समशानतुल्य होगये, और तेरे हुंढक श्रावकोंके घरजी समशानतुल्य होगये, और उनके घरमें नुं जिज्ञा लातीहै तो तेरी जिज्ञाजी समशानतुल्य घरोंकी मित्त हो गइ, तिन जिज्ञाके खानेमें तेरी देह वृद्धिजी समशानतुल्य होगइ, उन बास्ते तेरा लेख सममंजगहै अहो ! इस जिज्ञाकी मुहूर्थकीं यथार्थ लिखना कहानें आवे नया कि एतो मुहूर्थकीं नैजी है.

पृष्ठ ४ उत्तर पार्वतीनें लखजी हुंढककी दीक्षाका सं-

वत ३७३० का लिखा है सो जुग लिखाहै. क्योंकि अ-
मरसिंह हुंढकके वमेरे अमोलकचंद्र हुंढकने अपने हाथकी
लिखी हुंढक पट्टावलिमें लवजीकी दीक्षाका संवत ३७०९
का लिखाहै. सो पट्टावली हमारे गुरुके पासहै.

पार्वतीने लवजीके गुरु यतिका हाल लिखाहै सोभी
जुग लिखाहै. क्योंकि लवजी हुंढकका जो गुरुथा सो
लौकेका यतिथा. जिनोने प्रतिमाकी उठापना करी, और
इकतीससूत्र सचे मानेथे सोइथा. और जैनतत्त्वादर्शमें जो
लवजीकी वजरंगजीके साथ जो आचारकी वावत चरचा
लिखीहै तिसमें वजरंगजीकों त्रिथिलाचारी लिखाहै सो
भी हुंढकोंकी कल्पित समाचारीके लेखानुसार लिखाहै.

पांचमी पृष्ठसैं लेके दशमी पृष्ठकी चौथी पंक्तितक जो
लेख पार्वती हुंढकणीने लिखाहै सो सर्व मनकल्पित, जुग
और वेपगांजित लिखाहै. और व्यवहारसूत्रकी चूलिका
के अनुसार जो जो वातां लीखीहै वे सब उसकी समजमें
वीपरीत आइ है. क्योंकि व्यवहारसूत्रकी चूलिकाक
प्रमाण लिखाहैसो तो हमारे मस्तकपर है. परंतु उस
का नावार्थ इस हुंढकणीने यथार्थ नहीं लिखाहै. उस
बीच श्री नञ्जालुस्वामि लिखते हैकि चैत्य छव्यके हरे
वाले मुनि होंगे अर्थात् जिन प्रतिमाके छव्यके चोरनेवाले
माधु होंगे तथा लोचन करके माला रोपण, जिन जन्म म
होन्मय, उजमणादिक तथा जिनविंय प्रतिष्ठायोंकी जं
विधि है उम विधिकों त्याग करके अविधि पंथमे परमेगे'
इत्यादि पाठ है. सो उपर मुजिय काम करनेवालेकों तं
दपनी निन्दनेही है. परंतु पार्वतीका तो मुप भीठा नहं
नेताहै. क्योंकि इम पाठमें तो जिनप्रतिमाके छव्य हरे

वालेकी और माला रोपणादि जिनविध प्रतिष्ठा पर्यंत जि-
तने काम हैं सो सर्वही काम जो यथार्थ विधिसहित करना
न्याग करके अविधिमें करेंगे इनकी बातें हैं इमी पाठमें
तो मजबुत सिद्ध होता हैकि पुरातन काम अविधिमें नहीं
करने किंतु विधिसहित करने चाहिये. क्योंकि जब पाठमें
ऐसा लिखाकि विधिमें अविधिमें पढ़ेंगे तब प्रथम विधिमें
होंगे तो अविधिमें पढ़ेंगे, इस पाठमें विधि सिद्ध हो गई.
जब जज्ञवाहुस्वामीने विधिसहित पुरातन काम करने कथन
करे तो फेर उन कामोंको कौन निर्धर्मो प्राणी बिना निषे-
ध कर सकते हैं. अपरंच इन हुंदीये समान प्रतिज्ञा भ्रष्ट
थोमेही प्राणी होंगे क्योंकि जज्ञवाहुस्वामीके कथन कर
व्यवहारमूत्रकी चूलिकामें चंडगुप्त राजाके स्वप्नके अर्थ
तो ब्रह्मण करते हैं और उनही श्री जज्ञवाहुस्वामीकी करी
हुइ नियुक्तियां नहीं मानते हैं इमी वास्ते एही चूलिकामें
चोथे स्वप्नमें जो मूत्रका चोर, अर्थज्ञा चोर विंगरे लिखा
है सो हुंदकोके वास्तेही है वो पाठ इस प्रकारका है.

चतुर्थे स्वप्नमें भूत नाचना | तेणु करी कुमति जन
देख्या तह फलम

चतुर्थे चूयाणञ्चंति तेणकुमनजणा ॥

परंपरा आगमथी चादिर पठजे | सञ्चंदे आचार आचरीने
पुराचार्योनी परंपराथी चादिर. | परंतु पुराचार्योनी गीने नहीं

परंपरागमेणं बहीया सञ्चंदाचार चारीया ॥

सायमेव संजय क्षेत्रे. परंतु | आकाशथी पर्याणीपरं. जेस
शुभमिषे नहीं. एकारणथी. आकाशथी पर्याणा भायाप

नहीं तेम से पाए शुभरिना संजय क्षेत्रे.

सयमेवसंजमीया आगासप्रियाइव ॥

विनाविचारी ज्ञापाना वांजणहार. वांजना पुत्रनीपं असत्

निधधंसनासिणो वंप्रा पुत्ता इव ॥

अव्यालिंगना धारणहार जिहांतिहां सूत्र जणे तिहां.

द्वलिंगधारीणो जथ्यतथ्येवसुत्तमवगाहित

तपना चोर. वचनना चोर. सूत्रना चोर.

तवतेणिया वयतेणिया सुत्ततेणिया ॥

अर्थना चोर. साचा अर्थ ज्ञां | भूतनी पेटे नाचशे ते कुमति
जशे. जूठा अर्थ करशे ते. | भूतरूप जाणवा. ४

अथ्यतेणिया चूयाइवणच्चस्संति ॥४॥

हे पार्वती टुंढकणी ! इस व्यवहारसूत्रकी चूलिकाक
चोथा स्वप्नमां जो लिखाहै कि 'भूत नचेंगे' इस मुजिव त
तेरा जौनसा मत है सोइ भूत नचते है. क्योंकि इस स्व
के फलमें श्री नड्वाहुस्वामी कहते हैकि पूर्वाचार्योंकी प
रंपरासैं रहित, स्वच्छंटाचारी, अपने आप विनागुरु संय
लेवेंगे. जैसें कोइ आकाशमेंमें पमे उनके मावाप नही हों
है वैसेही विना गुरु अपने आप संयम लेवेंगे. विना विचा
बोलनेवाले. वांजके पुत्र सदश असत् यानि नही जैसें, ९
व्यालिंगके धरनेवाले जिहांतिहां सूत्र जणेंगे तिहां तप
चोर, वचनके चोर, सूत्रके चोर, अर्थके चोर यथार्थ व
र्थकों मिटाके जुठे स्वकपोल कल्पित अर्थ करेंगे-वे कु
तिजन भूतकीतरे नचेंगे. सो हमकों यथार्थ मालूम होया
जौनसैं कुमतिरूपी भूत श्री नड्वाहुस्वामीने कथन करे
सो तुमहीहो. क्योंकि सूत्राचार्योंकी परंपरा रहित अपने आ

यकपोल कल्पित आचार द्वाचरनेवाला और स्वयमेव मं-
 यम लेनेवाला तुमारा गुरुया. क्योंकि उन तुमारे गुरुका
 तोइनी गुरुया नहीं. और गण्पदीपिकामें जो गुरु परंपराय
 लेयीहैं सो सर्व स्वकपोल कल्पित पार्वतीने लिपीहैं. इस
 तातका सर्व निराकरण जागे करंगे. तुमारा आदि गुरु
 कोइ न होनेमें आकाशमें परे शदश तुम हो. तपकी चो-
 री करनेवाले तुम हो क्योंकि जगवानके कथनमें विपरीत
 करते हो वचनके चोर तुम हो क्योंकि जगवानके वचनोंके उच्चा
 पक हो. जैनमतके सर्व मुरातो नगी माननेमें मृशके चोर हो.
 पर्वोचार्योक्त अर्थहें जामके अपनी मति कल्पनामें विप-
 रीत अर्थ करने हो इस वाग्ने अर्थके चोइनी तुमनी हो.
 इस उपरके लेषणे सिद्ध होताहै कि तुमनिर्गपी भूत तुमही
 हो उर तुमही नचते हो.

पृष्ठ ५ वें पार्वतीने लिख्य संवत् ७३७ के लगत्त
 राग वर्षी काल पत्ता लिखा है सोही इउ लिखा है. क्यों
 कि किर्मीली इतिहास नवरीपमें गी लिखाहै कि उक्त
 संवत्में राग वर्षी काल पत्ता था. बलके उक्त संवत्में नो
 सर्व सिद्धमानमें राजा भजा और सर्व पत्तों के धर्म और वि-
 शेष कके जैनधर्म भर्षलिन था. और श्री नंदीजी मूचही
 आशीकी ३७ वीं ताशामें तथा ताया, दीक्षा, स्वमे लि-
 खाहै कि श्री मंडिल्लाचार्यके समयमें राग वर्षीका काल
 पत्ताथा. सो मंडिल्लाचार्य श्री जगंत मूर्धारी स्वामीके
 २७ में पाट उपर हुआ है, और जिनके समयमें कदाच
 शान था. पुस्तकावद नहीं हुआथा. अब वाग्ने पार्वतीने
 राग वर्षी का न संवत् ७३७ में पत्ता लिखा उनमें जो
 वमी मूठी वा लिखनेवाली सिद्ध होती है.

पार्वतीने पृष्ठ ७ में लिखा है कि "जैनतत्त्वदर्शनं लिखा है कि साधु चैत्य उच्यते गच्छा करे यथात नैत्य उच्यते नाश करनेवालेको हटाने, मना करे" यह लेख ई नशाखानुसार तो सत्य है, परंतु पीछे पार्वती हुंकारणी यह लिखती है कि 'ऐसा काम करनेसे साधुको धन-मालकीयत हो गई.' हम पढ़ते हैं कि उस पार्वतीकोही का पुरुष उमठानादि खोटे जावोंमें अनेक प्रकारके उपद्रव करता होवे तब चारोयणीमेंसे जितने पुरुष उपद्रव दूर करणमें उद्यम करे और उपद्रव दूर करे तो क्यावे सर्व रूप उनके मालिक हो गए? नहीं हुए, इसी तरे साधु रक्षा करनेसे धनका मालिक नहीं होता है.

पार्वतीने येही पृष्ठमें लिखा है कि वारावर्षी कालमें ष्टाचारी होके यतिजी यतिजी तथा संवेगीजी संवेगीजी हाने लगे यह लेखमें लिखने वाली महा मृपावादी सिद्ध होती है क्योंकि संवत् १७०० के लगभग जबसे श्री गणिस-स्य विजयजीने और उपाध्याय श्री यशोविजय गणिजीने बहुत कठिन क्रिया करी और वैराग्यके रंगमें रंगे गये तब श्री संघ उनको संवेगी कहने लगे, क्योंकि श्री उत्तराध्य-यन सूत्रके १९ मे अध्ययनमें ऐसा पाठ है-संवेगेणं जंते जीवे किंजणः इहां संवेग नाम वैराग्यका है, संवेग होवे जीसकों सो संवेगी, यह गुण निष्पन्न नाम है, सर्व पंक्तियों में प्रसिद्ध है, यह यथार्थ गुणनिष्पन्न नाम यति और संवेगी सुनके पार्वतीको क्यों अनिष्ट लगता है?

पार्वतीने लिखा है कि संवत् १७३० मे वारावर्षी उकाल पना तिममे कितनेही सूत्र विच्छेद हो गये, यहनी एक

गण्य जिनके हैं. क्योंकि चार वर्षका काल तो स्कंदिलाचार्यके समयमें पहिले पत्ता और देवादि गण द्वाया श्रमण-जीने पुस्तके ना पड़े लिखे हैं. तो फेर चार वर्षके कालमें शास्त्र कैमें लिखे हुए व्यवहृत हो गये !

तथा दुर्गा पृष्ठमें उगीने लिखा है कि " संवत् ११०० के लगनग मृगश्रीकी टीका रची गई है." यह लेखनि नि गकी अज्ञताका है. क्योंकि संवत् ५०५ में ना श्री हरि-उत्सुगि दिवंगत हुए. तिनकी रची श्री व्यावश्यक, पत्रवणा, नीरार्जिनगम, नंदी, दश धकात्रिक प्रमुग्य शास्त्रोंकी टीका है. और १४४४ ग्रंथ उरने रचे है. श्री शीलाकाचार्यने संवत् ७७२ में आचारंगानादिकी टीका रची है. और विशे-पावश्यककी टीका मोपद्म श्री जिनजइ गणि द्वाया श्रम-णजीने रची है. जो श्री हरिउत्सुगिजीमें पहिले हुए है. मयें ज्ञाप्य और चणों टीका मयें पूर्वधारीयोंकी रची हुई है. नवांगकी टीका श्री नरनयदेवसुगिजीने संवत् ११०० के लगनग रची है. इन मर्दानायोंने जो टीका रची है वे मयें गुरु परंपरायमें कंडाग्र अर्थोंकी भारणा चली आइयी ना रची है. इन टीकादिके अनुगारे पामचंदने जागण कि-चित्त मान द्वायाय अर्थ लिखा है. जो इन दुंदक दुंदकणी-योंको व्याख्यभूत है. परंतु इन दुंदक दुंदकणीयोंने द्वाया-थमें इतना जे लगनके कुछ योग्यता त्यागी अर्थानाम रचे दया है. संवत् १००० के पहिले लिखे अर्थ ना प्राये उ-रयें हुए है. इन दुंदकोने चने नार्गी नमके संभन रधि है. एत व्यावश्यकनाथ ग्रंथ जिनमें अग्रमम नगमम पिनाके नरीन रच लीना है. क्योंकि संवत् १००० में पहिलेकी लिखत हुनरी कलिपय व्यावश्यककी नती निगजती है. यत्ना

नहीं लिखा है कि श्री महावीरजीके शासनके माधुर्यकी पूजा जस्मग्रहमें बंद हो जावेगी और विना शुभ मन्मूर्छिम पंथी मुहबंधे दुंदुकाकी उदय उदय पूजा होवेगी. वारुणी पार्वती दुंदुकाणी ! नूनं नो ह्यधीके पेटमे शूल हृद्या और गदहको जुलाव दे दीये समान करा. शेष दशमी अग्यारमी पृष्ठ जूनी स्वकपोल कल्पिन लिखी है. अग्यारमी पृष्ठको १६ पंक्तिमें पार्वती लिखती है. शास्त्रानुसार क्रिया माधक, न्यागी माधु ज्ञानजी प्राचार्यको दुंदुके उनके पाम पैता-लीमननोने दीक्षा लीनी. हमनो जानतेयकि विचारें दुंदुक अनपमंइ इम वाम्ने जठ नाच गोलके अपना काम चला-ते है परंतु पार्वती नो पदी कहाती है और गुणावादीयोकी प्रगप्रापिनी नीकली है. क्योंकि अमरसिंह दुंदुकाके रमे दुंदुक अमोघनकचंद्रजी नो अपनी लिखी दुंदुक पहावल्लोमें लिखता हैकि ज्ञानाचार्य ज्ञिगधारी था अर्थात् संयम र-टिन था.

पृष्ठ १७ पंक्ति ११ मीमें पार्वती लिखती है कि " सं-वेगी लोकजी मेमें जानें है कि दुंदुकमन कुलुक ज्यादा १००० शास्त्री रणमें लिखला है" यह नो उमने यमी गण्य लिखी है क्योंकि जिनमनके माधु नो दुंदुक मयचो इण नं-वत १७०० में कर्तव है नर नो संवत १७४७ तक २७० वर्ष होते है.

तब नो पार्वती दुंदुकाणीने दुंदुका नाम पकटोरे हेतु लिखे हे मो मय गण्य लिखे है. क्योंकि लखनौको इण इण म-कान गदनाते भिनाया. उम देसन एहे मकानको दुंदु च-हेने है. उम ममानधे मनेमें लखनौका नाम लो मोने दुंदु-क गणा है. एण कश्चन दुंदुका पहावल्लोयोमें लिखता है. तब

श्री अथनिर्मुक्ति आगममें श्री नक्षत्राहस्वामी चौदह
पूर्वधारिनें ऐसा कहा है. गाथा.

संपादम रयरेणु, पमज्जणव वयंति मुहपत्तिं॥
नासामुहं च बंधइ, तीए वसाहिं पमज्जंतो ६४
अस्यावचूरिः संपातिम सत्व रद्धणार्थं ज-
ल्पद्भिर्मुखे दीयते । रज सचित्ररेणुस्तन
प्रमार्जनार्थं मुखवस्त्रिकां वदंति । नासिकां
मुखं च बध्नाति तथा मुखवस्त्रिकया वस-
तिं प्रमार्जयन् येन मुखादौ न रजःप्रवि-
शति ॥ ६४ ॥

ज्योति ज्ञाना-संपातिम जीवाकी रक्षा वाप्ते बोजतां
शकां पुत्र आगे मुखवस्त्रिका देनी तीन मदिन रजके प्र-
मार्जन रागे मुखवस्त्रिका रयनी गणधरादि करके है. जब
रयनि प्रमार्जन करनी तब तिन मुखवस्त्रिका करके नाक
मुह दोनो बंधने. मुखवस्त्रिक रज न पके इस वाप्ते. ६४

पार्वती देवकामोक्तोक्त शरणं मानं आशोभसे मुत्र वां-
जंका पाठ दिगलाना वाशिसे.

पार्वती पुत्र १६ में लिखती हैकि 'मुखपत्र रते मो मु-
खवस्त्रिका. 'मो नो हाथमें रते मो हाथवस्त्रिका' वा ज्यु-
स्त्रिय पार्वतीने तथा कर्ममेन, व्यासमुत्र, दीर्घा वा नम-
सोपदन्ती रती इत लिखी तनीन व्यासमुत्रमें लिखी है
'यथाकि रयन मदिन अवाचरयामें मो ऐसा कार्य नही हो

मंगल के अभाव में मंगल ग्रह का प्रभाव नहीं पड़ेगा।
 मित्रता सुखान्विता पाती मंगल की मित्रता
 मंगलविरता. पार्वतीने मंगलविरता का अर्थ जिया
 नो पूर्वोक्त अणुमं समान मंगल दे । हो-एव मंगल
 नीलहो मङ्गलमे पम्नेमें मंगी मर ता व्यन्य पम्नेने प
 के तुं जोन है ता नो कठने लगी के में । कर्म्य तादशा
 जानी हं. जब बोलने लगी ता हां हां कठने लगी
 व्यन्य जानवगेने जाना के यह नो मंगी हउ मीदमी है”
 मंगी पार्वती हुंढकणी मर्ग बंढहोमें पंमिलानी नन म्ही
 परंतु जब अद्बोधवाले समझी पांथी नांनेगे तब त्रास
 मेव पूर्वनी अन्निमानपरित जानेगे

पृष्ठ १६ में आगे लिखती है कि “ रजोहरणकी दृष्ट
 लमें मोरी पावणी कहां चलीदे ?” उत्तर-तेरे माने शास्त्र
 तो मुहपत्तिका मोरा, सामीका मोरा, रजोहरणकी दा
 योंका मोरा नहीं चला है जो तुं इन तीनों मोरोको
 मती क्युं नहीं है. किस शास्त्रके कठनेमे तुं पूर्वोक्त ती
 मोरे रखती है ?

अथ इससे आगे पार्वती हुंढकणीने जो जो उपण
 नतखादर्शके लेखमें लिखे है तिनका समाधान लिखते

पार्वती पृष्ठ २० में लिखती है “श्री हेमचंद्रसूरि
 को पांच वर्षकी उमरमें दीक्षा लिखी सो विरुद्ध है क
 कि व्यवहारसूत्र तथा जगवतीसूत्रमें आठ वर्ष जन्मसे न
 होवे तिसको दीक्षा देना नहीं कल्पे है ऐसा कथन है.”

उत्तर-श्री व्यवहारसूत्र तथा जगवतीसूत्रमे जो क
 है सो उत्सर्ग मार्गकी अपेक्षा कथन है. और अपव

मार्गमें आठ वर्षमें छोटी उमर वालेकोनी दीक्षा देनी क-
ल्येई. इस कथन निशीथ ग्रंथमें है. इस वाले विरुद्ध
नहीं है.!

पृष्ठ २२ में लिखा हैकि "श्री हेमचन्द्रमूर्तिर्जने गाढे
नील करोरु ग्रंथ रचें लिखे हैं नो जूठ है" उत्तर-जूठको
मचनी जूठही मालूम होता है क्योंकि कल्पद्रुम टीकामें
लिखा है 'श्री हेमचन्द्रमूर्ति गाढे नील करोरु ग्रंथका कर्ता
आ है. हमारे संप्रदायमें श्लोककोनी ग्रंथ कहते हैं और
एषां शास्त्रकोनी ग्रंथ कहते हैं. फेर पावनी लिखनी है
तने श्लोक रचे नहीं जा सकें हैं. उत्तर-एक अंतर्मदुर्जमें
गाधरदेव चौदहपूर्व किम तरेमें रच लेंथे? जेकर कोनी
नो ललियमें रच लेंथे नो इनके रचनेमें ललिय क्यों
नी मान लेनी. पावनी कहनी है 'ललिययां नो व्यवहृद
गइ है.' उत्तर-तरे माने हुए किम भाष्यमें लिखा हैकि
'रचनेकी ललिय व्यवहृद हो गइ है. पावनी-इनके श्लोक
'कर लिखे? उत्तर-उनकी मजामें मंगल पंक्ति व्या-
ग, काव्य, छलंकार, न्यायादिक वेदाथे, और चार
न देवायां महायक थी. यह रचन श्री गिनपविजय
व्यासजी ईम व्याकरणकी टीकामें लिखते हैं. पावनी!
मे विचार हो कर के १०० पंक्ति दिनभरि भी सो
लिखे नो पचास वर्षमें अक्षरालोक श्लोक लिखे-
गाढे तीनकरोरु नो दस वर्षमें पूरा हो जावे.

पावनी लिखनी है कि "सुदर्शिया जनमान्य है" या
सुदर्शिया मंत्रविद्याका नाम है वा अन्य कियी प्रसूतानाम?
सुदर्शन मंत्रविद्याका नाम है मंत्र तो पारेल थी सुधर्मशास्त्रि
सुधर्म शास्त्रके आचार्योंकी आशाचना करनेवाली है. क्यों

कि सूत्रोमे जहां सुधर्म स्वाम्यादिकोका वर्णन लिखा है
 तहां ऐसा पाठ है. विद्या पहाणे मंत्र पहाणे मंत्र
 विद्याके जाणनेमें वरु प्रधान अर्थात् सामर्थवान् है. इस
 प्रकारसें गणधर तो मंत्रविद्या जाननरूप वरु गुण लिखते
 है और पार्वती भूत विद्याको अपमान लिखती है. १

पार्वती पृष्ठ २४ में लिखती है कि “चेत्यवृद्ध अर्थात्
 ज्ञानवृद्ध” यह पाठ खाटा है और अर्थज्ञी जूठा लिख
 है. क्योंकि श्री समवायांगजीमें ऐसा पाठ है चेत्यरुस्क
 टीका बद्धपीठ वृद्धा येषामधःकेवलान्युत्पन्नानीति
 चैत्यवृद्ध, चौतरावद्धवृद्ध जिनके हेठ केवल ज्ञान उत्प
 न्न हुए थे. चैत्यवृद्धका जो पार्वतीने ‘ज्ञानवृद्ध’ ऐसा अर्थ
 लिखा है सो मिथ्या है क्योंकि चौतरावद्ध वृद्धका नाम
 चैत्यवृद्ध है. देव लोकादिमें तथा नमि प्रव्रज्या अध्ययनमें
 श्री चौतरावद्ध वृद्धोका नामही चैत्यवृद्ध कहा है.

फेर इस पृष्ठमें पार्वती लिखती है कि “तीर्थकरोंके
 दीक्षावृद्ध सूत्रोंमें नहीं चले है इस वास्ते विरुद्ध है.
 उत्तर-तीर्थकरोके १७० एकसौ सत्तर सत्तर बोल सप्तविंश
 स्थानक सूत्रमें लिखे है उसमें दीक्षाका वृद्धनी लिख
 है और तेरे माने सूत्रोंमें जेकर सर्व बोल नहीं निकलेंगे
 विरुद्ध किसके माध्य हुआ. क्या जगवंतका ज्ञाप्या स
 ज्ञान तेरे माने शास्त्रमें आ गया? ३

पद्मप्रज्ञ और वासुपुत्र्यजीके दीक्षा तपका जो वि
 गोथ लिखती है सोनी अज्ञापणमें लिखा है. यंत्र लिख
 ने वालेने किमी ग्रंथांतरसें मतांतरसें लिखा हावेगा. ४

मल्लिनाथजीका जन्म कल्याणक जो मथुरामें लिख

है सो यंत्र लिखने वाले ही भुज है. मिथिलामें मथुरा लि-
खी होवेगी. इमीतरे श्री नेमिदीका कल्याणक जो मोरी-
पुर लिखाई मोती यंत्र लिखने वालेकी भुज है. ५

श्री माह्वनाथजीको जो अठोरत्र उग्रमथ लिखा है
सो मतानरमें है क्योंकि नमनिशनम्यानक सूत्रमें अठोरत्र-
काही उग्रमथ काल कहा है. जेकर पतांतगेकी बात सर्व
जुडी मानेगी तो तेरे माने रचीम सूत्रमेंनी परम्पर बहुत
विरुद्ध कथन है तब तो तेरे माने मूरजा जुडे हो जावेंगे.
ध्यान निश्चय बाव तो यह हैकि चौविश तीर्थसंगे एकसंगे
गत्तर पाल रचीम सूत्रमेंमें काह दिखलाये तब तो विरु-
द्धा विरुद्धता विचार होवे. नहीं तो फांगट छुदनेमें क्या
होता है ! ६

पृष्ठ २६ में पार्वती लिखनी हैकि कृपजदेवकी मा-
सलोमें बलदेका चिन्ह लिखा है ज्येन फेर नौर्याम तीर्थ-
तोके पगोमें लक्षण चिन्ह है यह परम्पर विरुद्ध है.

उत्तर-जो माथलोमें चिन्ह था उसमें तो कृपज नाम
रखा गया है. ज्येन जो पगोमें चिन्ह था सो तो ज्येन अन्य
थकगेके पगोमें चिन्ह में है. श्री कृपजदेवकी पगो-
ती बलदेका चिन्ह था. उसमें परम्पर विरुद्ध क्या हुआ ७

पृष्ठ २६ में ३० तक पार्वतीने जो अगमन मगमन
था है निम्नका उत्तर-देवतादश ग्रंथमें जो कुछ लि-
खा सो सर्व ग्रंथ ग्रंथ या पद्यावली ना आतादिध्यादि प्र-
त्यनमान लिखा है. पार्वती देवताकी जो रूप ग्रंथों-
मेंकी देवताके चिन्हकरी है सो इसरी भुजका है. पता
अनमनक माथोमें क्यादिप. धाक, मंत्र, मंत्र, नमोदय
सर्व विद्याम लेखनी ८

कर्मके करनेवा निवेदन करने, जेमा जमा २० ६, जे
 कान, ज्ञान होवे २०. तेनी जेमा जे पा पायो २० ६
 गति होती है. किसी जमे पणपत्तमके नामे मंसादि
 स्ने पमने है, किसी जमे पणनी मंसादि नामे मंसादि
 स्ने पमने है, किसी जमे जैन मंसादि पञ्जातनाके ना
 मंसादि करने पमने है, किसी जमे मंसादि कर्मना गने
 निषेध है गने शाय चतुर्वर्गपादरूप है. श्री धर्मशास्त्र
 र्यने तथा सिद्धसेन दिवाकरादि प्राचार्योंने जो कुछ
 होवेगा सो छव्य केनादि देगके करा होवेगा. उनकी
 वत पार्वती बोल बोल करती हैं परंतु येह विचारी जैन
 शास्त्रोंका क्या जानती है. हमारे तो शान्ताज्ञा मान
 सदाही ज्ञानदर्शनचारित्रकी वृद्धि है. और जो लंस
 जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें है सो सर्वा पूर्वाचार्य रचित ग्रंथानु
 है. और जो पूर्वाचार्योंने लिखा है सो सर्व लोकनी
 धर्मनीति, सोमनीति, कादवनीति, अर्हनीति, वारतुशा
 शिल्पशास्त्रादि शास्त्रोंके अनुसार लिखा है. छव्य जी
 काँ अनेक प्रकारका ज्ञान होनेसे धर्ममे दृढता आ
 होती है.

प्रश्न-तुमने तो जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें लिखा है सो पू
 चार्योंके ग्रंथानुसारही लिखा होवेगा परंतु तुमारे पूर्वा
 र्योंने सावय्य वचन क्यों लिखे? क्योंकि तिनके वचन
 चकं जो कोई सावय्य काम करेगा तव ग्रंथ रचनेव
 आचार्योंका पाप लगेगा के नहीं?

उत्तर-हे भोली! तुंतो कुगुरोकी वहकाइ होइ
 इस वास्ते तुं सावय्य निरवय्यका स्वरूप नहीं जानती
 सावय्य उपदेश उसको कहते है जो किसी पुरुषको क

ना है तुं यह काम कर-परंतु शास्त्रोंमें जो कथन करना है सो मावयोपदेश नहीं कहा जाता है. जेकरनुं शास्त्रकी लिपनकों मावय मानती है तो श्री चंद्रपणचि और मूर्य पद्मचि शास्त्रोंमें अठारवीस नक्षत्रोंके जोजन बहे है. इम नक्षत्रमें यह बस्तु खायकर जाये तो कार्य मिच्छ होय. तिनयें कितनेही नक्षत्रोंमें अन्नरू बस्तुयोंके जोजन लिखे है. अय इम पत्रने है यह जगयंतका कहना और गणेशगोंका गंधना मावय है वा नहीं? जेकर कहेंगी मावय है तब तो तेनुं जगयंतकी आशातना करनेका दोष लगेगा और शास्त्र मानय मिच्छ हो जायेगा. जेकर कहेंगी जगयंतने किमीको अन्नरू पानेकी आज्ञा तो नहीं दीनी तो तम पत्रने है. ऐसे ज्ञान कथन करनेमें जगयंतकों क्या ज्ञान हुआ? और शास्त्र माननेवालेको क्या ज्ञानदर्शन चाखिती बृहद् हू? इम वांचनेमें जिनाज्ञाका त्यागवना क्या मिच्छ हुआ? तथा इम पाठकों वांचकर जो कोइ पुरोंक नक्षत्रोंमें पुरोंक अन्नरू माकर अपना कार्य मिच्छ करेगा तब मध कर्षाकों क्या ज्ञान होयेगा? इम वाचमें रहनेका यह है कि न काणी इच्छणीकी तरे एक पायकीही बेनसीदा या जाननी है—जिन ग्रंथकों तथा मान लोषा सो सग हो गया और जिन शनिपाके श्रेय करने. आचार्योंके सभे ग्रंथकों मावय और निश्चक उद्गमवरीण. इम वाचने तुं नृगुणके शतकों लोम्के किमी नृगुणकी सेवा कर जिम्मे को. मावय निम्नवरी पावर पम्.

और स्वरोदय शास्त्रोंके तुं पापद्वय लिखा है परंतु किमी शास्त्रमें नहीं लिखा है. इम पत्रने जेवरा तुककों वरा देम जेता चाखिए उदयरा तो कार्य करनयें क्या

नमस्ते, तस्मै नमो न दी ते, जगत्तु जगत्तु, ते
 जगत्तु, जगत्तु जगत्तु, नदी जगत्तु जगत्तु जगत्तु जगत्तु
 वृत्ति होती है किसी जगत्तु जगत्तु जगत्तु जगत्तु
 रने पमने है, किसी जगत्तु जगत्तु जगत्तु जगत्तु
 रने पमने है, किसी जगत्तु जगत्तु जगत्तु जगत्तु
 मंत्रादि करने पमने है, किसी जगत्तु जगत्तु जगत्तु जगत्तु
 निषेध है. सर्व शास्त्र उत्तमार्थादिक है. श्री धर्मोपा
 र्थने तथा भिन्नमेन दिवाकरादि पाचार्योनि जो कुछ
 होनेगा गो ज्ये जगत्तु जगत्तु जगत्तु जगत्तु. उनकी
 वत पार्वती बोल बोल करती है परंतु येह विचारी जगत्तु
 शास्त्रोंको क्या जानती है. हमारे तो आमाड़ा मान
 सदाही ज्ञानदर्शनचारित्रकी वृद्धि है. और जो लंग
 जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें है सो सर्व पूर्वाचार्य रचित ग्रंथानु
 है. और जो पूर्वाचार्योनि लिखा है सो सर्व लोकनी
 धर्मनोति, सोमनाति, कादवनीति, अर्हचीति, वास्तुशा
 शिल्पशास्त्रादि शास्त्रोके अनुमार लिखा है ज्ये जी
 को अनेक प्रकारका ज्ञान होनेसे धर्ममें दृढता आ
 होती है.

प्रश्न-तुमने तो जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें लिखा है सो पू
 चार्योके ग्रंथानुसारही लिखा होवेगा परंतु तुमारे पूर्वा
 र्योने सावद्य वचन क्यों लिखे? क्योंकि तिनके वचन
 चके जो कोई सावद्य काम करेगा तव ग्रंथ रचनेव
 आचार्यको पाप लगेगा के नहीं?

उत्तर-हे भोली! तुंतो कुगुरोंकी वहकाइ होइ
 इस वास्ते तुं सावद्य निरवद्यका स्वरूप नहीं जानती
 सावद्य उपदेश उसको कहते है जो किसी पुरुषको क

ता है तुं यह काम कर-परंतु शास्त्रोंमें जो कथन करना है
 सो भावधोषदंश नहीं कहा जाता है, जेकरमें शास्त्रकी
 लिखनकों भाव्य माननी है तो श्री चंद्रप्राज्ञि और अर्य
 पञ्चि शास्त्रोंमें अष्टावीश नक्षत्रोंके ज्ञानन कहे है, इस
 नक्षत्रमें यह यस्तु भाव्यरु जाये तो कार्य सिद्ध होवे, नि-
 नये कितनेही नक्षत्रोंमें अज्ञत यस्तुओंके ज्ञानन लिखे है,
 अर्य हम पूछते है यह जगदंतका कहना और गणेशोंका
 गूँघना भाव्य है वा नहीं? जेकर कहंगी भाव्य है तब ना
 तेनु जगदंतकी आशातना करनेका दोष लगेगा और शास्त्र
 भाव्य सिद्ध हो जायगा, जेकर कहंगी जगदंतन किमोंको
 अज्ञत मानेकी आशा तो नहीं होती तो हम पूछते है,
 अर्य ज्ञान कथन करनेमें जगदंतकी क्या आज्ञा हुआ ?
 और शास्त्र वाचनेवालेकी क्या ज्ञानदर्शन चारित्र्यकी वृद्धि
 हुई? हम वाचनेमें जिनाज्ञाता आशयना क्या सिद्ध हुआ ?
 तब हम पाठकों वाचकर जो कोइ पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें पू-
 जोंका अज्ञत भाव्य अपना कार्य सिद्ध करंगी तब तब
 कर्त्तोंकी क्या आज्ञा होयेगा? हम ज्ञानमें कानेका यस्तु है
 कि तुं कर्त्तों दृष्टाणोंकी तरे एक पाठकोंकी देखनीया
 या जानती है—जिन ग्रंथकों तथा मान ज्ञोया सो मंग
 हो गया और जिन ग्रंथकोंके अर्थ करने आचार्योंके अर्थ
 ग्रंथको भाव्य और निरर्थक ग्रहनादर्शन, हम ज्ञानमें तुं
 भ्रमोंके मगको ग्रंथों किमी मन्त्रोंकी भेदा कर जिनमें
 नके भाव्य निरवगती भाव्य परं.

और नगोदय भाव्यकी तुं भाव्यलिखा है परं
 किमी भाव्यमें नहीं लिखा है, हम ऊँच ज्योतिषी तुं
 हम उर लोका चारिद भाव्यना जो वाणी जेकरमें रना

उत्तर-श्री आचारंगमं लिखा है गांधी मंशे जाय
हुआ किन्तो गाममे गिर पर तो पश्यांगयक प्रजाय
वृद्धो माली वा बेलमी गुणाः परम्भे निरुत्त पावे
३ श्री आचारंगमं लिखा है कि माधु गांधी आमानुश्रा
विहार करतां बीचमे नदी प्राजावे तो एक पग जलमे ए
पग स्थजमे रगकर नदी उत्तर जावे २ श्री आचारंगमी
मेंही लिखा है नायाका मालक माधुकों नदीमें भरे तब माधु
आपही नदीमे प्रवेश कर जावे ३ श्री मुयगमांगमं लिखा
है आधा कर्मा आहार कारण वास्ते जोगे तो कर्मबंध नही
होवे ४ श्री गणांगमं लिखा है माधु-साधवीकों कीचरुममे,
पांच वर्णकी निगोदवाले कीचरुमसे तथा नदी आढिकमें
वहेतीको काढ लेवे तो तीर्थकरोंकी आज्ञा उछावे नही ५
अैसेही वृहत्कल्पमे लिखा है ६ कल्प सूत्रमें लिखा है
नाला नगरीके मध्यमें एरावती नदी बहती जंघा प्रमाण

उंमं साधु निम नदीकी उल्लंघके जिदग ले आवे. ३ क-
 ल्पसूत्रमें लिखा है योनी योनी संयती उंटे पम्नी होवे
 तो म्वाविकल्पि साधु जिदग ले आवे. ४ श्री जगदी-
 जीमें कहा है श्री संयका कामपने तो साधुदायमें तजवार
 लेके उंमा न्याकालमें जावे. ५ इत्यादि जनेक भाषाके पाठ
 है जिनमें लिखा भवतु दीप पम्नी है तो फेर साधु या
 पम्के चाम्ने हिमा को श्रीर श्रावक पम्ते चाम्ने हिमा न
 करे यह समज सुखीकी है क्योंकि मात मजानिशीधमें
 जिनमेंदिन जमाने आलेकी चाम्ने देवश्रीक जानेकः कल्प
 कहा है. श्रीर मीमांसी पूजागत फल राज मन्वीर सूत्रमें
 मोक्षका काव है. श्रीर फलोंमें पूजा करनेमें संसारका हान
 होवे जैसा फल श्री भावश्यक मन्में कहा है तो फेर नि-
 गके निषेधमें कम्पर सांयती चत मिथ्या मीष्टियोंका
 लक्षण है.

पृष्ठ २॥ में पावेतो श्रुतकोने जो श्रुत लिखा है
 सो पढ़ है.

श्रुत्यन्थानं करोतिपापं धर्मन्थानं विवर्जिततया॥
 धर्मन्थानं करोतिपापं तज्जकन्त विवर्जिते ॥१॥

मन्थन तो यह श्रुत करीब सुखीका नहीं है. श्रीर उंमं
 पयवेला लिख है. श्रीर निम पम्निने यह सोचो मन्थ
 तमी है मिथ्या मीमांसकी ज्यो श्रुतमें देवपनेमें साधु
 मीमांसकी है जब पार्वतीकी संयति करकेसे सुख मीमांसने
 करनी मीमांसका फलको तमी है. पार्वतीकोलो अक्षर
 प्रान तो जैसा है श्रीर मीमांसका मन् में यह सा-
 धन करती है.

विष्णु मंत्र
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

हम प्रविष्टाग्नि में जाकर अन्न खाएंगे और अन्न खाकर
विष्णु की तृप्ति प्राप्त होगी। अन्न खाकर अन्न खाकर
अन्न खाकर अन्न खाकर अन्न खाकर अन्न खाकर

पृष्ठ ३७ में लोकान्त पिश्यानाका मन्त्र जो
लाइशके लेख में लिखा है सो मन्त्र है 'प्रां' जो नान
कारके वर पदिकके नाना प्रकारके कार्योंके नामों
करनी कहो है सोनी मन्त्र है 'य्योति' जैनमतके शास्त्र
ऐसाही लेख है और जैनमत अनेकान्त स्थावररूप है
किरी मंड श्रद्धालोकों तो मिश्र्यान्व है और तीव्र श्रद्धा
वालोकों मिश्र्यान्व नहीं है यह कमलीकी नथ नहीं है।
कित्तु कुगुरोंके मतकी वामनाका प्रभाव है जो
नहीं समझना

पृष्ठ ३७ में लंके ४२ मी पृष्ठ तकके लेखका
"दान तप पूजा सामायिक फटे कपड़ोंमें करे तो।
है" यह लेख मस है क्योंकि शास्त्रमें ऐसाही लेख है
पार्वतिके माने वत्तीय सूत्रोमे गृहस्थ फटे हुए क
प तप पूजा सामायिक करे तो सफल है - ११

नहीं है. तो फिर पारिवर्तन जननवादीशैके लेखकों जगत्
 क्यों लिखा है. क्योंकि जो गृहस्थ पढ़े हुए, धर्म अथुनि
 कर्ममें रूपांग, दीनदीन कृपा रूपांग निगमों तो योगदृष्टि
 समग्र शास्त्रमें सम्यक्तर्कों नहीं रहा है. जब यो हिनपु-
 ष्यबाला गृहस्थ धर्मकार्यमें तो शास्त्रोक्त तब कर्म नहीं
 प्रकनेगा तो निम दालिजी ग्रहस्थने दान नप पूजादि ध-
 र्मकार्यही गया कर लेना है. और जगतीयादिक शास्त्रोंमें
 जब जगत्त तथा ज्ञानार्थिकोंको बंदना करने वाले
 गृहस्थ श्रावक गये है तब ऐसा कथन करा हैकि प्रथम
 स्नान करा. पीछे देव पूजा करी पीछे बहूत लखे संकलित
 न्यायन्याय पदिकोंके बंदना करनेको गण्येसा लिखा है.
 परंतु पीछे, अथुनि, ज्ञान रक्षित, ज्ञानार्थिकोंके उभयित पढ़े
 हुए कर्ममें पदिकोंके बंदना करनेको गण्येसा तो नहीं लिखा
 है. और जो पारिवर्तन शक्तिशाल मुनिमें धर्म करकोंका दर्शन
 होया है तो जगत्त है क्योंकि जननवादीशैके जो कथन है
 तो प्रथम श्रावककी पदिका है. निगमोंमाथुका दर्शन देना
 धर्मनाशक काम है. पारिवर्तन लिखा हैकि कौंड पढ़े हुए
 कर्ममें पदिकोंके पीछे पारिवर्तन निरुक्त मग्य भीना नहीं हो-
 वेना. उचर-को पीछे लपने प्रथममें मोगीही जीवन एव
 प्रमेय धर्मोंके पीछे पारिवर्तन नोनहा मग्य भीना होवेना के
 नहीं. केकर होवेगा तब तो दुष्टक श्रावककी पृथोक कर्म-
 र्मों सामाधिक पोष्य करेगे पर तो हिनकोही बन्ध हो-
 वेना तो और श्राव नि तो एव्य पृथुकी पंक्ति ७ में लिखा
 है 'अथुनि मग्य प्रथम करके सामाधिक कर्म उभयता एव
 निमित्त है. और तब तब अथुनि परमेव पर तो जगतीया
 जगत्त अथुनि होना चाहे. पर तो बिना दान वेही नहीं

शकता है क्योंकि रात्रको स्त्री संगदि करेगा तो प्रातःक
फेर स्नान करके शुद्ध होके फेर शुचि वस्त्र पहरेना होके
पार्वती विचारी कहीं कहीं यथार्थभी लिखती है प
क्या करे दुंदक मतानुसार तिसकों कहीं कहीं मलीनता
जी पसंद करना पमता है.

पृष्ठ ४० मे मे सामायिक पूजामें जो विरोध लिखा है
सोची दृथा है क्योंकि सामायिकमें छव्यपूजा करनेका
श्रावकको निषेध है और निर्धन श्रावक जो सामायिक
करनी गोमके छव्यपूजा करे तिसका कारण यह है कि
निर्धनकों पूजा करनेकी सामग्री मिलनी उर्लज है. और
सामायिक तो जब चाहे तब कर सकता है. इत्यादिक सर्व
जैनतत्वादर्श में लिखा है

और जो मकमीके जाले उतारणे बावत लिखा है.
सो सत्य है जैन शास्त्रमें ऐसाही लेख है, परंतु जो
लिखा है कि श्वेत रंगके मकमीके जालेमें अनेक अंमे
है वे तत्काल मरजावेंगे यह सर्व पार्वतीने मिथ्यात्वके
दयमे झूठा लिखा है क्योंकि जैन तत्वादर्शमें श्वेत रं
अंमेवाले जालेका लेखही नहीं है. जो लिखती है "ज
उतार गेरे तो यत्नही काहेका है?" उत्तर-शास्त्रमे लि
है जब माधु नदी उतरे तब यत्नमे उतरे; जब कचे प
णोमे पग रस दीया तब त्रमथावर अनंत जीव तो मा
दीप फेर यत्न काहेका दुआ विचार कर पार्वती !

पृष्ठ ४१ में पार्वती तीन प्रकारकी पूजामें दूषण लिगत
है मोती इमकी मूर्पना है क्यों कि जैनशास्त्रोंमें जगंत
श्रावककों तीन प्रकारकी पूजा करनी कही है - और जिम
पूजामें जो विशेष फल है मोती कहा है. इम्मं इन ति

- श्री पूजा में जिनमन्त्री आजा है और जिनपूजा
 1 पूजा में जिनमन्त्री है और जिनपूजा है. दोनों
 2 जिनमन्त्री प्रमाण होगा तो मंत्र फलकी ही मानते.
 पृष्ठ ४७ में पृष्ठ ४८ पंक्ति ११ तक जो कुछ लिखा है
 में सब उलटाना चाहते हैं क्योंकि यह सब जिन श्राद्ध
 विधि में है और श्राद्ध विधि में वास्तु शास्त्र में लिखा है जो
 वास्तु शास्त्र के श्लोक हमारे पास हैं. परन्तु हम पृष्ठ में लिखे
 हैं किने जाने शास्त्रों में यह लिखा है कि नमो भगवते धर्मिणे नमो
 - लिखी विधानों वगैरे, किसी विधान वगैरे यह करने पूजा करने
 प नहीं है. " " लेकर ऐसा लिखा नहीं है जो फल है मन्त्रों !
 मन्त्री नमो भगवते मन्त्र शास्त्रों में लिखी गया लिखी हुई
 मन्त्री मन्त्रों मन्त्र नहीं समझे है. क्या तुमको इस वि-
 श्व में वास्तु ज्ञान नहीं प्राप्त है :

पृष्ठ ४७ में जो मन्त्रों की वास्तु मन्त्र वास्तु करना
 मन्त्रों में जो मन्त्र हैं वास्तु मन्त्र मन्त्रों में मन्त्रों
 मन्त्रों में जो मन्त्रों हैं वे "मन्त्रों की मन्त्रों
 मन्त्रों मन्त्रों नहीं कर मन्त्रों " जो मन्त्रों मन्त्रों
 मन्त्रों मन्त्रों लिखते. मन्त्र मन्त्रों की मन्त्रों मन्त्रों
 मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों
 मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों

और जो मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों
 मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों
 मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों
 मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों
 मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों मन्त्रों

नेही पूजा में जिन राजकी आज्ञा है और योगपूजा
 वा पृ ४० नो ज्ञापूजानी है और खल्य पूजानी है. दोनों
 जा निनाज्ञा यमाने करेगा तो मोठ फलतो ही दाता है.
 पृष्ठ ४२ में पृष्ठ ४४ पंक्ति ४४ तक जो कुछ लिखा है
 सो सर्व प्रकृतताका निन्दह है क्योंकि यह सर्व खेप श्राद्ध
 विधियों है और श्राद्ध विधियों नाम्ब आसुनें लिखा है तो
 नाम्ब आसुनें श्राद्ध विधियों नाम्ब प्राप्त है. परन्तु हम पहले है कि
 भेरे मानि आसुनें यह खेप है कि नाम्बनेके मोठिननें नाही
 वे निशामें वषो, जिगी दिशा तर्क मठ करके पूजा करे,
 व नहीं है. " नेकर मंसा खेप नहीं है तो फेर के मग्ने !
 नाही मयोजन में सर्व आसुनें खेपवो तथा जितनी इष्ट
 आसुनें मन्मं शंया नहीं मयवी है ! तथा तुलनां एक लि-
 पनेवें पापता ज्ञान नहीं जाना है :

पृष्ठ ४४ में जो हलपतीरी वाच्य सोन पोभर. कन्ना
 पूजा है सो सर्व मय " भास्त्र विधादि मासोंमें मेमासी
 वि है और जो तुनिपतीनें के "कुण्डली भवे निर्मित
 तैह पञ्चमास नाहीं कर महावाधा " तो फेर पाठ में
 के मासोंमें शिवालादे और नरनापी निनासेना पा
 मयलां. तर्को जो तैहो मय जिम्बनें मयमं मय
 सो मयन्य मयतो भवृ करवी है !

और जो ज्ञापके सर्व वाच्य विधु निनासेना
 मय है मयो वि भास्त्र विधियोंमें मेमासी मय निना है
 किम्ब मयम होना ही मयो मेमे कुण्डला सोप है
 होना मय वि निना है मेमे मय मयमयमयो
 वे नहीं है.
 पृ. ४४ पंक्ति ४४में पृष्ठ ४४निर्णय मयवा सो निनासेना

मन्त्रों का अर्थ समझना।

पृष्ठ ३७ में पृष्ठ ३८ पंक्ति ७। तक जो श्लोक लिखा है सो भूतनामों का लिखा है। यहां कि यह वाला जैननामोंका मण्डल श्लोक जमाने नहीं लिखा है सो वामने श्लोक जमाने लिखनेकी आवश्यकता नहीं।

पृष्ठ ३८ पंक्ति ७। में पृष्ठ ३९ पंक्ति १। तक जो जमाने लिखा है सो मन्त्र अर्थ है। पृष्ठ ३८ पंक्ति लिखा है “नमो ब्रह्मलिपये” जंगला श्लोक किमीर्न सूत्रों नहीं है और इस पाठका जो अर्थ लिखा है स्वकपाल कल्पित लिखा है। जेकर इसके लिये मुझ और अर्थ इसके माने वही मन्त्रोंमें निकल आवे इसको सची मानना चाहिये—जेकर न नीकले ।

पार्वतीको उत्सृज ज्ञापक मानना चाहिये, और इमकी “ज्ञानदिपिका” कोजी जो सची माने उमकोजी ही जानना।

प्रतिमाके पूजनेके फलों वाचत फेर वो लिख परंतु इस संबंधमें हम उपर लिख आए हैं।

पृष्ठ ५० पंक्ति १० में दृग् वैकालिकता का अर्थ जो पार्वतीने लिखा है सो असमंजस है. क्योंकि पार्वती लिखती है कि "भूषण गहने सहित अलंकृत स्त्रीको दृग् नहीं" इस अर्थमें जो भूषण गहने सहित नग्न स्त्रीको दृग् करनेमें निषेध नहीं होगा ! परन्तु दृग् गाथाका अर्थ पार्वतीको यथार्थ नहीं आता है क्योंकि इसका गुच्छल है सो छवि-दृग् सोका है. इस वास्ते इस विषयार्थको यथार्थ अर्थकी प्राप्ति कदांसे होवे, क्योंकि गन्तार्थी पुण्यको दृग् जो जो दृग् सोको काँछीयानें मिलता है परन्तु चमार्थी परमें जो चमार्थी दृग्में पक्षीयार्थी मिलती है. इस वास्ते मन्वाउंम पंथको उंमके मेकन श्री गदावीरके भासनके गौतार्थमें श्रीमिनी सो दृग्को यथार्थ आशयोंको प्राप्ति हो जायेगी.

पृष्ठ ५० में पार्वतीने लिखा है "जो ध्यानका हेतु है सो वाग्या हेतु नहीं है" जो विद्यावाज्ञानके उद्द्यमे लिखा है. क्योंकि श्री आचारंगजीमें लिखा है "जे आ इ मया ते परिमिया, जे परिमिया ते आमिया." इसका जगार्थ यह है कि "जो आश्रयके हेतु है वेनी नि-
 जेमारे हेतु है सो जो निजमके हेतु है वेनी आश्रय त्रयके हेतु है." इस वास्ते पार्वती जो उद्द्यमाके हेतु उद्द्य, स्वार्थ के सुखोपमय लाभ हेतु उद्द्य निगरी है सो तैत भाष्यमें लिख है इस वास्ते पृष्ठ ५० में लेखर पृष्ठ ६० पंक्ति ३ तक के उद्द्यमें जो लिखा है सो श्री गुरुजीकरकेवल जोर देसनीको ही परित्याग लिखी है.

पृष्ठ ५१ पंक्ति ३ में लिखमें विद्यागर्वा भावन जो लिखा है सो श्री गुरु देवके हेतुमें लिखा है जोर लिख

१. शिव - परमेश्वर - केवलज्ञान - की - प्राप्ति - के - लिये - अनेक - प्रकार - के - उपाय - किये - गये - हैं -
 २. वेद - वेदांग - श्रौत - यज्ञ - स्मृत्युक्त - ब्रह्म - संन्यास - समाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -
 ३. आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -
 ४. आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -
 ५. आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -
 ६. आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -
 ७. आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -
 ८. आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -
 ९. आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -
 १०. आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा - आत्मसमाधि - आत्मनिष्ठा -

श्री कपिल केवलीने उक्तयननगरीमें महावीरस्वा प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करी ऐसा महावीर चरित जासमें हि है. सकसे श्रावकोंने जिनमंदीर बनवाए जास्योमें चह श्रेणिकराजाने, प्रज्ञावती श्राविकाने, वग्गुर श्रावकन मंदीर बनवाए यह कथन आवश्यक मूत्रमे चला हे ३

गली, महापद्मदिक अन्तर्देशेन तथा यैकको श्रावकोन
 मीर्य मीर्यत पृथ्वी करी यद् अशिक्षक पूर्वधारिण्येन,
 पश्चमानयोग श्रावणे हे. यह पावनी विधानि विद्येय
 नृत्त जाननी नली हे. परंतु ज्ञानिपान बहुत धराती हे.
 पृष्ठ ६३ में मे लिखती हे "जिन मरिषा तो पौक
 वीभीजी विद्वती हे. जेकर नम कथोमे पावनी तो मोन
 वेकले हे तो हम श्रावको जगतान तो नहीं मानवे हे?"
 लीचन-मृद नमवायोगके ३५ में नमवायोगे लिखा हे.
 नमवायोगे नमवत्तु यथात्र ज्ञानायोग जगत्तुके ३५
 नमवायोगे हे नमवायोगे विचार करना चाहिए हे

हेर तो ज्ञानायोग सूक्तो जगत्तु कहते हे. न
 विद्वत्तु की उली ही हे "हम श्रावको जगतान तो भा.
 हे" हमसे तो गणरागेमें ही पावनी जगत्तु ज्ञान-
 हे" जोर नसे नमवा योगे पावनी कथे लिखती
 "हम नहीं मानते हे, हम नहीं कथे हे" जेना लि-
 जोर हमसे क्या कथता हो वेकले हे नमवा हे जेना लि-
 रूपक दादी हे नमवा हे; जेकर मेरे रूप तोना
 जो तो जगत्तु ही हे जोकरे जोर नम, वेन, विचारनी
 विचारनी, श्रावको, श्रावको हीका पार जे विचारने
 जो पावनी लिखती हे "जिन मरिषा जिन मरिषी मृद
 नमवा हे जगत्तु नमवा जगत्तु ही मृद
 जे. जेना विचारने मरिषी मर पाव तो
 नमवा जगत्तु मरिषी मरिषी मर पाव तो
 मरिषी हे.

श्री शंभुजय नीधेही पाया करने वामने इन्द्रियदेवताओं वि-
हार करा नर पागलन मुदि १० के दिन हांभीने फरे
नीन कोसके अनेक गाममें मुदरनी नुनानीथी. उन दिनोमे
मुनगातीयाका भाचुकाग कही देखाया. यह बात पंजाबके
मरे जल्यजन जानते है.

श्रीर पापनी श्री आन्ध्यागमजीरे जय. गहन गुलाद
मुनगाती भावकोंको मुनके आनिलने नरो नुनानी है ?
उन पापनीने पूरे जन्ममें पुरानी कर्म करिथे जिनमें सबसे
सेवरक पैगाल, गेले, कुनेले, जयां राजोया नमी होउ थी
तिरियावाले हउ है, उनमें श्री आन्ध्यागमजीगत क्या होउ है
श्रीर जो पापनी लिखनी है 'आन्ध्यागम मुनगातीने एक
लिखा है.' फेर पृष्ठ ७३ में लिखनी है कि आन्ध्यागमजीने
जैननयाश्रममें पतंजराय श्रीर गणदण्ड नै नरे मरे 'पिने
कीने है' लिखा है इस आश्रममें सेनेता लिखा है. यह
पापनी लिखनी थी जादिता गनला मुन्य ही एक
होगा है.

पृष्ठ १० में लिखत पृष्ठ १०५ तक जो भाग लिखने के
विनया मुन्य लिखने आरभत लोक लिखनीलिखनी पूना
रमने है श्रीर लिखनेमें लक्षणा मानते है जो पापनी पस्त-
शाकजी मुनके कलां श्रीर गामायापनीके मुन मुनगातीने
पुने मरे श्रीर पूना पदज होय ? लक्षणा मुनके पद
पुने मरे श्रीर पूना मरगला ? पदनी लिखने ? श्रीर लिख
१०६ है लक्षणापि लक्षणा मरे श्रीर लिखनी लक्षणा श्रीर
लक्षणापि श्रीर लिखनी ? लक्षणापि लक्षणा श्रीर लिखनी
१०७ श्रीर लिखनी लक्षणा ? लक्षणापि लक्षणा श्रीर लिखनी
१०८ श्रीर लिखनी लक्षणा ? लक्षणापि लक्षणा श्रीर लिखनी
१०९ श्रीर लिखनी लक्षणा ? लक्षणापि लक्षणा श्रीर लिखनी
११० श्रीर लिखनी लक्षणा ? लक्षणापि लक्षणा श्रीर लिखनी

लित विस्तरा १० शांतिसूरिकृत चैखवंदन बृहद्जाप्य
 श्री देवेंद्रसूरिकृत लघु चैखवंदन जाप्य ११ श्री धर्मयो
 कृत संघाचार वृत्ति १३ संघदास गणिकृत व्यवहारः
 १४ बृहत्कल्प जाप्य १५ श्री मलयगिरिसूरिकृत
 १६-१७ हेमचंद्राचार्यकृत योगशास्त्र १८ पूर्वधर सं
 गणिक्रमा श्रमण धर्ममेनगणिकृत प्रथमानुयोग १९ हेम
 सूरिकृत त्रैलोक्य श्लोका पुरुष चरित २० पूर्व चिंतन
 कृत श्राद्ध दिनकृत मंत्र २१ श्री वर्द्धमान सरिकृत ला
 दिनकर २२ श्री रत्नशेखरसूरिकृत श्राद्ध विधी कांमुदी
 जाचार प्रदीप २४ उमास्वानिकृत श्रावक पत्राति २५
 मृगि विरचित नव पद प्रकरण २६ जिन जडगणित
 श्रमण विरचित विजेपात्रयक २७ शब्दांज्ञानिधि महा
 पत्राति २८ श्री महावीर जगन्तका शिष्य, चौदह
 शर्मा, तीन ज्ञानका भरता श्री धर्मदासगणिक्रमा श
 रितिका उपदेशमाला २९ पञ्चशरी हेमचंद्रसूरिकृत
 ३० श्री जगन्नाथसामिकृत व्याख्यक निर्गुति
 श्री जगन्नाथसामिकृत पंचाशक वृत्ति ३१ पारुशक रित
 श्री जगन्नाथ ३२ श्री जगन्नाथसामिकृत श्री राजश्रीय
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३३ श्री महापद्मसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३४ श्री देवसूरिसामिकृत, सामिक
 श्री जगन्नाथसामिकृत, श्री जगन्नाथसामिकृत, श्री जगन्नाथसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३५ श्री जगन्नाथसामिकृत ३६ श्री जगन्नाथसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३७ श्री जगन्नाथसामिकृत ३८ श्री जगन्नाथसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३९ श्री जगन्नाथसामिकृत ४० श्री जगन्नाथसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४१ श्री जगन्नाथसामिकृत ४२ श्री जगन्नाथसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४३ श्री जगन्नाथसामिकृत ४४ श्री जगन्नाथसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४५ श्री जगन्नाथसामिकृत ४६ श्री जगन्नाथसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४७ श्री जगन्नाथसामिकृत ४८ श्री जगन्नाथसामिकृत
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४९ श्री जगन्नाथसामिकृत ५० श्री जगन्नाथसामिकृत

पुत्रों को मानेगी न्यायो पुत्र्य तो उनका एक वचन मानेगा.

जिन शास्त्रोंके श्रावण तो जिन मंदिर, जिन मन्दिना तरे बनवाने है, और जिन तरे पुजने है, और जिन चार निद्रेष मानने है, जिन तरे व्यवस्था मानने है, जिन तरे अपने गुण्योंको उपास धर्मक लाते है, तो पुरोहित संख्यानमान करते है.

पृष्ठ ७६ में मेलिपती है कि "वृषारं गुण्यों उपासवाने जेगी अर्थानि वृद्धे वजाने है इत्यादि" उपास-व्यमर्गो-द्वयमे संशय १०/२७ में व्यवसयमे राज कथाया उ-पे मुन्दे उपर जिननेही उपासने वृद्धे भाषकने मेरे है उपासने एमे मे जेमे जिनमेक वमार, देर, मेरे, जी, नार किमे उमे किन्ते : तो एमे व्यवसयमे ही जेमे व्यवसयमे एमे नया व्यवसयमे उदय मे भेदनी लक्ष्मीमे वर रथाया तो एमे तो मेरे वपनाथ एमने उपासने वापदादेके मुन्देको जना मर्के है तो एमे व्यवसयमे उदयमे नया व्यवसयमे एमे नया मुन्दे मुन्देके जामे पाजे जी मे म-लमान लक्ष्मीमे ही वनाए विवेमे एमे पाजे हमने पाजे मे वनाए : मेरे वपनाथ वा मर्के है नया व्यवसयमे न मुन्दे उदयमे नर वृद्धा लक्ष्मीमे वा जी पाजे तो एमने मान और संशयमे ही वनाए होमे मेरे पाजे तो एमे वपनाथ लक्ष्मीमे वा मर्के है नर तो विद्या जेनेवाले मु-न्देके वर वपनाथ मर्के है तो मर जेनेही विद्या मर्केके वर वपनाथ मर्केके विद्या मर्के तो वनाए. मेरे पाजेके मेरे वपनाथ "वृद्धे वपनाथ पुरोहित वापदादे वापदादे"

...के ...
 ...के ...
 ...के ...
 ...के ...
 ...के ...

परिणत हमको उन मानेवालों को समझना मान्य मानते हैं.

उत्तरायण के महा मठियों! मरते पागे राजा-राजा नेमे संसार जाता मानते हो तो जीते कुंठकोंके पथि नाने वज्रानेमें तुमारे-समारका जाता कहां नष्टहो जाता हैकि तुम इस वषत नहीं वज्राते हो. देमो इन कुंठकोही मठना! जीते कुंठक आगेता वाजे नहीं वज्राते है और मरे हुए कुंठकके आगे वाजे वज्राते है ! द्रव्य निक्षेपे के उपर दोशाने गेरते है उकायकी हिंसा करते है और मुगसे कहते है हम तो जावनिक्षेप मानते है. उनके शरीरकी महिमा करते हो और जिनराजकी स्थापनाकी महिमामे पाप वनजाते हो यह मतांधपणा नहीं तो क्या है ? तुम जो संसार साता कहते हो उसमे असल बात तो यह हैकि तुम करतेतो ही अपने मरे हुए गुरुके वास्ते परंतु मिथ्यात्व के उदयसे और जिनप्रतिमा के छेपसे मृपावाद बोलके संसारका खाता कहते हो. हमारे तो श्रीव्यवहार सूत्रकी ज्ञाप्य वृत्तिमे लिखा है कि गुरोंको वमे उत्सवसे नगरमे लावना, इसमें जिनधर्मकी प्रजावना होती है.

पृष्ठ ८८ में पार्वती लिखती है " ये मुख खोलके बोलना प्रधान रखते है " यह लेख जूठी गप्पका है, क्योंकि हमतो मुख आगे यत्र करके बोलना प्रधान रखते है. आ

आराधना के पूर्व जन्म का पाप के प्रत्याहर्ष में सुख प्राप्त पार्थी
 शंभु लोनी थी, जब जिन मन के शास्त्रों में सुख पार्थी विरह
 जानी तब गोल्लोनी, दुर्गम योनी जो सुख पार्थी उनगत
 है सो उनलौनी दुर्गमों के फल में निहालने है और गरी
 होने है, और जो सुख बांधा जाता है सो गाय, बैल, घोड़े
 प्रमुख पशुओं का बांधा जाता है परंतु नया पुरुष को बंध
 नहीं बांध सकते हैं, पार्थी लिखती है कि " सुख बांधके
 फलमंजुला को कोटि दुःख पाया जाता है, सब काम क-
 रना प्रति दुःख है, सबका नहीं कर सकता है " दुर्गम इ-
 म जन्ममें जो बांध नाक रुपाके जन्म एक राजा बनके
 फीरे निगतों से मज्जाधनी मदनवी शंभुनी कर्माणि पैसा
 काम करना प्रति दुःख है, पैसा कामकीको कोटि कर
 सकता है, सब काम नया पार्थी बांधके, पतिव्रता और पुत्र
 तरना सोने करिसे है क्योंकि नया सुख बांधके दिवना
 निहालने गति है सो सब काम करने नया ही है
 और सुखपार्थी बांधनी बांधनेके कामे निगती है सो नया
 सब काम प्रति प्रति गोरी सुख बांधे निगती निगती
 है सो नया उभरी जोर तेन सबे सा सुखी जानने है ?
 जानने है.

पुत्र पति में बांधनी लिखती है " जो नया दुर्गमपत्नी-
 के निगति है सो सबे सुखानर गवली नगी है. " दुर्गम-
 दुर्गमपत्नी का धरना सो सबे निगति है सो सब निगति
 क्योंकि नया मज्जाधने सोने सबबांधके ही सब निगति
 है, निगति सो दुर्गमपत्नी निगति करिसे सोने सो-
 दुर्गमपत्नी बांधके पत्नी सोने सबे सुखानर निगति है,
 बांधे लिखती है " दुर्गमपत्नी के बांधके ही सुखानर

वजवाते है परंतु हमधर्म तो नहि मानते है.” उत्तर-जब आरासिंहादि हुंढकोके मुरदे आगे वाजे वजवाते है जंकर निनेमे तुमारे गुरुयांकी महिमा नही तो क्या तुमारे श्रावकों पुत्र पुत्रीका विवाह मुकलावा हो रहाथा कि जिस. वासं वाजे वजवाते है ?

पूर्वपक्ष—हमतो उन वाजेगाजों को संसारका खाता मानते है.

उत्तरपक्ष—हे मुग्ध मतियो! मुरदे आगे वाजे वजवानेमें संसार खाता मानते हो तो जीते हुंढकांके आगे वाजे वजवानेमें तुमारे संसारका खातां कहां नष्टहो जाता हैकि तुम इस वखत नहीं वजवाते हो. देखो इन हुंढकोकी मढता! जीते हुंढक आगेतो वाजे नहीं वजवाते है और मरे हुए हुंढकके आगे वाजे वजवाते है ! द्रव्य निक्षेपे के उपर दोशाले गेरते है उकायकी हिंसा करते है और मुखसं कहते है हम तो ज्ञावनिक्षेप मानते है. उनके शरीरकी महिमा करते हो और जिनराजकी स्थापनाकी महिमामे पाप वतलाते हो यह मतांधपणा नहीं तो क्या है ? तुम जो संसार खाता कहते हो उसमे असल बात तो यह हैकि तुम करतेतो हो अपने मरे हुए गुरुके वास्ते परंतु मिथ्यात्व के उदयसं और जिनप्रतिमा के छेपसं मृपावाद बोलके संसारका खाता कहतं हो. हमार तो श्रीव्यवहार सूत्रकी ज्ञाप्य वृत्तिमे लिखा है कि गुरोंको वमे उत्तमवमें नगरमें लावना, इसमे जिनधर्मकी प्रजावना होती है.

पृष्ठ ८८ में पार्वती लिखती है “ ये मुख खोलके बोलना प्रधान रखते है ” यह लेख जूठी गप्पका है, क्योंकि हमतो मुग्ध आगे यत्र करके बोलना प्रधान रखते है. आ-

प्रायःमर्जादि पूर्ण जन्मदा पापके मन्त्रावर्गें मुखसागें पाटी
 अथ लोभीपी, जय मन मन के माग्योमें मुख पाटी लिख
 आनी नव पांडुरोगी, दुग्गुणोंकी जो मुख पाटी उतारने
 : जो उनकोती दुग्गुणोंके फंदमें निवालेने है और एभी
 रोने है. और जो मुख सांघा जाता है जो नाय, बैल, घोसे
 अथ पशुओंका सांघा जाता है परं नदा पुण्य जो मुख
 इहाँ सांघ रखने है. पाटीकी लिखनी है कि " मुख सांघके
 फलनेवाला जो जोड दुग्गुमा पाया जाता है, यह साध क
 ना अति दुख है. दुग्गुमा नहीं कर सकता है. " मुख
 उतारनेमें जो जोड नाक कनाये और मुख काना कनाये
 और निमकों में सदायसे माननी जोभी उगीके फल
 जय फलना अति दुख है. ऐसा करवनीको जोडनी कर
 सकता है. मुख अंगे नदा पाटी सांघने फलना और एसा
 कना रोने मर्जादि है. अतीर नदा मुख सांघके फलना
 जिनादाने अतिर है जो मुख जाले करने उख ही है.
 और मुखपाटी सांघनी पीजानने अने लिखनी है जो गया
 अथ मध्य मर्जादि अति जोभी मुख सांघ जिनाली लिखने
 है जो गया उखी जोड विन काने साध नहीं मानने है
 जानने है.

पुत्र रूप के पाटीकी लिखनी है " जो जोड फलनेवाली-
 ने लिखा है जो जोड नराजक मर्जादि नहीं है. " मुखसांघी
 अथ मर्जादि माध्याता जो जोड लिखा है जो जोड लिखा
 अतीर अथ मर्जादि अथ साधवनेके जो नाम लिख
 है. जिनाली अथ मर्जादि लिखा है फलना अति उख
 रोने अथ मर्जादि अथ मर्जादि लिखा है. जिनाली है.
 पाटीकी लिखनी है " अथ मर्जादि अथ मर्जादि जो एसा जोड

कागनेने निग्या है निग्या तो मःअन्धनतमें जन्म लनगी है नगनमे कतना है। "विधिगी नों पय तः मोंगी है कि पाहाश गिर पमेना नों मे चुगता थान लेउंगी" ऐमे यह पार्वती जी दुहक मनके थानने नामे चुग कर्गी है और महागनियोके रने गायांकों गुग उहगनी है। हम पू उते है कि वत्तीग मुनामें किभी जमे ऐगा लोग है। कि "अविरती गुणठाणेवाला परस्त्रीमे व्यभिचार नहीं कर्ना है और परस्त्री सेवनेवालेको सम्यक्त नहीं माना है" ऐमा पाठ तो सुत्रोंमें नहीं है, तो फेर मदांय होकर तैने आवश्कके लेखकों केमे जुग उहराया !

विचार कर ! के जंतुआदि नगरोंमें तेरी दृष्टीमे दृष्टी लगाके तेरा व्याख्यान मुननेवाले मुख्य दुहक श्रावकथे सो वमे व्यभिचारी मुनानेमें आए है. जववे तेरेकों वंदना कर तैथे तव तुं कहतीथी "श्रावकजी दया पालो." उन विर रोने क्या जाने कितनी परस्त्रीयो और वेडयायोकी अं सन्मुखिम जीवांकी दया पाली होवेगी. इसतरे. तेरे मुख श्रावक तो पांचमे गुणठाणे चाहो कैसाही कुकर्म करे अं श्री जगवंतका जक्त, अविरती सम्यग दृष्टी गुणठाणेवाले सखकीकों परस्त्री सेवनेसे तुने पर्वधर आचार्योंका कथ जुग उहराया सो कैसि मर्खताकी बात है ?

इस सखकीकी उत्पत्ति ठाणांगके नवमे ठाणेमे कह है और मूल पाठमे मोक्ष जानेवाला कहा है परंतु. मतांध को शास्त्रनी नहीं दीखता है. एह पार्वती उम सखकीकों प्रतिमा पूजनेवाला वांचके उसकी वहत निंदा लिखती है परंतु जेकर सो सखकी-मतसे गुदा, मुहपत्ती, जाली, पछे उर सीर धोनेवाले, सन्मुखिम पथी मुह वंयोका जक्तथा,

यौन विन मनिमका निदकथा, ऐसा जेप होना तो वि-
महो वांनके पावनीका नैम नैम कपिन होना यौन निद्रा
न करती परंतु क्या को विनागी ! ऐसा जेप तो जैम
शास्त्रमें है नहीं.

एक गणदीशिकामें जो पद्मावली कुशुकी लिखी है.
तो मने कुशुकीकी पापे लिखी है. यों कि पाप तो वर्षके
पापके ही एक पद्मावलीको निरत नहि है. यौन जो जो नाम
पद्मावलीमें लिखा है तिनमेंमें किसीने कोइ प्रेय नचा हुआ
होए तो लिखा जात. तिनमें एक नामकी मनीन पाके नहीं
तो लिखत नाम पावक. तिनमेंमें तो पद्मावली मनी नहीं
तो पावकी है.

दोस गणदीशिकामें जो जेप है कुशुकी जो जैम प्रेया-
नकार भेद है तो तो मने है. यौन तो एतने पदकी कल्प
नामें लिखा है तो एतरी गणदीशिकाके है. एतके मयको कुछ
लिखनेकी आवश्यकता नहीं है.

अथ गणदीशिकाके दूसरे नामकी थोड़ीसी गाथा लिखने हैं.

१. १७ १०० में एतरी मयके मयके मयके नाम मयाण
के लिखा है तो मय.
२. १७ १०० में मयाण के मयके जयके मया नि
मयो मय
३. १७ १०० में मयाणके मयके मयके मयके मयके
मयो मय लिखा है तो मय
४. १७ १०० में मयाणके मयके मयके मयके मयके
मयो मय लिखा है तो मय



कर्मणा जिम्मा है नो गण्य.

२१. माहात्म्यमण्डले में दो लोमम्बका ध्यान करणा जिम्मा है मां गण्य.

अर्थात्क बहुत गण्य जिम्मा है परन्तु हमने यह देखे । दोनके भयमें यह उपर जिम्मा हूँ २१. गण्य जन्म विषयकी बल्लभ होनेके लिये जिम्मा है. नो देय लेनी. न ये २१. गण्य नहीं होवेना बर्जीम मृशोसमें जिस जिम्मा कि पाठमें जिम्मा होवेना पाठ दिग्मायो--जेकर नहीं जाये नो करदोकि हमारा पंथही पिप्ययान मुक्तक है ए- १ नूठ धोत्राने लोम जिम्मानेमें क्या दोष है ?

पूर्वपक्ष--यस पारसी दंडवणीने पंजी पंजी गण्य जि- १ नो गया हमके पाननाका का नहीं है !

उत्तर--इसके लिये उभरमें नो पंजाही मान्य होनाई. पूर्व-ज्ञानहीपितामें पंजा जिम्मा हैकि "लम्बका लम्ब- कुमान न दोने-भावादिवासी जात व्यष्टी न होवे. तथा न दूजा न होवे. उभरका बहुत जोश न होवे, बहुत न होवे, मोत्रता न होवे, योगेता का जिम्मा आजा- न होवे, हमारे दोहा देवेना उभर निर्दोष." यहवाता जिम्मा श्रुतिमें देवा नहीं ?

उत्तर--यस उपर जिम्मा हूँ जानां बर्जीम मृशोकि न पाठमें नो कोउनी जमे नहीं है, और जिम्मा पद्यानमें है । इस मुद्वरीज् नपाए नहीं है.

द्वैत--मुद्वरे मां नहीं है इमेक उद्वरे मां है ।

उत्तर--जना पृथी विचार करोकि जो कमान हू- १ नहीं नहीं मां कमान उद्वरेमें कमाने जाया है यहवा विन्वाही १२ देदे देदे शानि लेगा हुआ.

प्पन्नूयस्सः जलजञ्चस्थलजञ्च जल
 स्थलजं जलजं पद्मादि स्थलजंविचकि
 लादि चास्वरं देदीप्यमानं प्रन्नूतमतिप्र
 चुरःततःकर्मधारयः चास्वरञ्चतत् प्रन्नूतं
 च चास्वरप्रन्नूतं जलजस्थलजंचतत् चा
 स्वर प्रन्नूतंच जलजस्थलज चास्वर प्र
 न्नूतं तस्य घुनःकथंचन्नूतस्येत्याह—वेणुग
 इस्सः वृन्तेनाधोवर्तिनातिष्ठत्येवंशिलंवृ
 न्तस्थाधितस्य वृन्तस्थाधिनः वृन्तमधो
 चागे उपरि पत्राणीत्येवं स्थानशीलमस्ये
 त्यर्थः दसध्वणस्स दशानामर्ध पञ्चवर्ण
 म्येतिचावः (इत्वं नूतस्य कुसुमजातस्य
 वर्णं वर्षतेत्यर्थः)

नापाः— गजके नांश्च उपशांत करो, करके जलम्य
 के चत्पन्न हूण फल, जल के उत्पन्न हूण कमलादि औ
 स्थलके चत्पन्न हूण विचिकित्तादि अर्थात् जाइ जइ इ
 यार्दि पांच वर्णोंके फुलकी जानु (गोमे) प्रमाण वा
 क्को अर्थात्क मुग्धियान देवने अपने अनियोगिक चाक
 नेरमा पाजादी तत्र वा अनियोगीक देवता मह आइ
 इत्वं इत्त एव गुणा द्वारा श्रीग वैक्रिय कृत्वि करके ज

श्रीसन्मन्त्रोत्तरं स्वाधी विगतमानसं तदां प्रागे र्दंशु नम-
 स्कारं करुणं मृदुव्याज देवकीं त्याजा सन्धि मयं ब्रह्मकाव
 आदि वरके पुष्प वर्षावने योग्य बहल करु, बहल करु
 मयं योगिन ममाणु मंरुलके विच ह्यम लिपे ह्य मलस्य-
 लरं उन्मय ह्य पंनवर्णिके पल्लोमी कानु ममाण वृष्टि
 करु. यदां पुष्पवर्षावने योग्य बहल विह्वल्यां हे मित पुष्प
 नदी विह्वल्यां हे. यद करुन श्री गजपथीय मृदुमे हे नो
 दिनेन्य वृष्पोंन देव लेना.

यदि प्रायेण नैवती हे वि साचन पुष्पेण बहल
 नदि विह्वल्यां हे मितु वैदिक मय बहल विह्वल्यां हे इम
 प्राये नैवित नदी. इम नैवती साचन इमती गजपथी
 य मृदुमे नो पुष्पे के बहलगत पाद हे मरे लिपे हे
 दिनेनै नदीय नारी सौती साचन हेते वि साचनीया क-
 मन मय हे कि मृदुमे हे तथाय तथायः

पुष्प बहलम् विह्वलन्ति ॥ टीका ॥

पुष्पवृष्टि योग्यानि वार्दलकानि पुष्प व
 पुष्कान् मेघान् विकुर्वन्तीति ज्ञायः ॥

इम पाठ्या ज्ञायार्थ इम पुष्पे विह्व आदरे. तद गुरु
 पुष्पेणो विह्वार वरुना वार्दल वि मृदुमेण साचने न-
 म्मन्मन्त्रे उन्मय ह्य ममाणी कृष्टिनी किये हे उन्मयो ले-
 नके मरे मन्त्रिय पुष्प मरेण मरे को इयाना विह्वेण मम
 हे. मरे पुष्पेणो साचन मरे मरे हे.

पुष्पवृष्टि . यदां नो मृदुमे पाद मृदुमे मन्त्रिय वरेके
 मरे मरे मरे हे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे
 मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे मरे

अपिय-जमिन्नवोअणंतो तुहआणा ।
 हिएहिंजीवेहिं । पुण जमियवो तेहिं जे
 नंगीकया आणा ॥१॥

अस्यार्थः—हे जगवन् जिनप्राणीयोंने तेरी आज्ञा
 राधन करी है वे प्राणी इस संसारमें अनंते ज्वरले
 फेरनी जिनप्राणीयोंने हे जगवन् तेरी आज्ञा अंगी
 नहीं करी है वे प्राणी इस संसारमे रुलेंगे।

तथाच—

जो न कुणइ तुहआणं, सो आणं कुण
 तिहुअणजणस्स । जोपुणकुणइ जिणाणं
 तस्साणा तिहुणेचेव ॥३॥

अस्यार्थः—हे जगवान् जो माणस तेरी आज्ञा न
 करता है तिन पुरुषोंको तिन लोककी आणा करनी प
 है. और जो पुरुष जिनेश्वर जगवानकी आणा अंगीका
 करे है उस पुरुषकी आणा तीनलोक मानते है. क्योंकि
 आखीरमे जगवानकी आणा अंगीकार करनेसे वंही प
 दकी प्राप्ति होगी, तब उस पुरुषकी आणाती तीन लोक
 अंगीकार करेगे यहनिःसंदेह जाणना. इस वास्ते जो
 जो जगवानने कथन करा है सांसो सर्वही प्राणीयोंमें
 अंगीकार करनी चाहिये.

और यह जो कितनेक मानते है कि “जगवनकी प
 जायें केवल हिमाही होती है” वो उनलोकांकी समझमें
 फरक —

। जगवान् ऐसा उपदेशाती नहीं देने, उस धाम्ने मनमें
 नाशों शंका जो जगवान् पढ़ावाजन कथन कन है ना
 व करके मानना चाहीण, यीर रुदायिन शंका एम जोवे
 । यह महावाक्यें सुनमें वयार्थ गुजामा कान्ना चाहीण,
 कनु मेम नहीं कन्नाकि जो व्याधीजीने क्वा मन् वा सुठ
 । एते लुप करणण, नयोति निगदाही टोके जवनक मन्ना-
 त्त्वका नयार्थ निर्णय नहीं करेम नप नर खान्नाका क-
 थाण होना उचन है.

पुर्वेक—पार्वीने जिगा क्षेति ज्यने क्षेत्रमें माप
 पाथी जिग क्षेत्रों विहार को उत क्षेत्रें श्रावकोंको
 निती प्रादिकमें मपर देवे के ज्यके मापु तथा मन्मन्ती-
 नीने एमके दिन गुह्यां क्षेत्रों विहार यानी पदुचनेकी
 थना मी है, ज्यो एमका जय मापु तथा मागी ज्यने
 क्षेत्रमें तिन क्षेत्रमें याने यानि एते जो उत क्षेत्राजे
 यामकोंको मपर देवे, एतादि एत यह कथन यचीम पा-
 र्थमें ही है नहीं यौर एमने जिगा ऐ जो कदांमि न्नाह
 क्लिया है ।

उत्तरक—एत यात्र मों उत जिगनेवाजीकीने पुत्रों
 किने न्नामि यह सत म्वाह है ।

पुर्वेक—जो जीनी के एत कथन यचीम सुवमें जो नरों
 है एते, ज्वाकि निधिग में एवनी बुद्धिमें नरनीष्ट

उत्तरक—जो कथन एतमें एते एतमें एते जो एत-
 कथनमें जिगना यह निर्धमों मागीका माह है, एत एत
 एतमें है यौर यीमापु मागीके मागे मापारे तिम एतमें
 जो है माह उतपमर तिम जिगनी है, ज्यो एतमें जो
 जिगनेवा ज्वाकनी बुद्ध कथन एते है जो माह यचीम

दर्शन करने। अमूल्य ज्ञान जीना है। और यहाँमें
 का शक्ति और ज्ञान (आपणी) में साधु श्रीके दर्शन
 श्रीनगर, पद्माराज श्री देवचन्द्रजी स्वामीके दर्शन क
 गुरु श्री. सुधा, श्रीस्त्री, श्रीस्त्री, बदनाम शक्ति और
 श्रीमें मिलानकर मुझ संतोकावापने जीपणकार, लक्षण
 धर्म विमोच काय विवे अंदाजमें करीब चार हजार
 है। और कहते हैं कि अथवा इस वाइका विचार, दो
 मरणीय अथवा अथवा है धर्म है धर्मका काममें पैसा
 चनेतापने मुझ आचरकों, एकमें पैसा मिलाने नीनी मया
 है। इस इस वाइकों ज्ञानरमानी गिनके धर्मवाद देने है
 एकमें काममें किन्ति नहीं है किन्तु पैसों धर्मके का
 ममानेमें कीन्ति है। पैसा मद्यकाज करना नहीं है परंतु
 कि ज्ञान मद्यही नहीं है।”

यह उपन्यास ज्ञान वाचक मुझ धर्मको विचार क-
 सा वाहीय कि जगवान तथा दिनमलिधा और जैन वि-
 की वाया जानेकों तथा दर्शनकों ना बनाइ करनी और
 उनके धर्मों ज्ञानके विमोच कमाने ना केने ज्ञानमें पु-
 योग्य नरवान है। और मेरु में ज्ञान करनी कि “वाइ
 माने नहीं करवाते है” तो जिन धर्मन ज्ञान वाचने यह
 धर्मन नम ज्ञान धर्मन बनाइ बने नहीं करनी। इसमें यह
 धर्म नोवा है कि “जन्में उपन्यासमें ज्ञान मद्यने पुन्य ज्ञाना
 विमोच, यदि तो बनाइ करनी यह विमोच काय धर्म
 धर्म, ज्ञान नरवा तो यह विमोच होना के ज्ञान मद्यने ज्ञान
 धर्म विमोच नरवा” कीनोमें यह वाच को ज्ञाना धर्म
 धर्म, धर्मों, और धर्म के धर्म धर्मों के “मुझ धर्मने जो
 ज्ञान धर्म तो धर्मोंके धर्म नरवा है” तो धर्मोंके धर्म नर

उत्तरपक्ष—यह क्रिया करनेवालेकों जो फलकी प्राप्ति होती है सो नीच लिखे हुए दृष्टांतोंसे जान लेवे. तथाहि:

१ श्री जिन प्रतिमाजीकी भक्ति करनेसे श्री शांतिनाथजीके जावने तीर्थकर गोत्र बांधा यह कथन श्री प्रथमानुयोगमें है.

२ श्री जिन प्रतिमाजीकी पूजा करनेसे सम्यक्त शुद्ध होता है यह कथन श्री आचारांगजी सूत्रकी निर्युक्तिमें है.

३ “थशुशु मंगलं” अर्थात् स्थापनाकी स्तुति करनेसे जीव सुलज्जबोधि होता है. यह कथन श्री उत्तराध्ययनमें है.

४ जिन भक्ति करनेसे जीव तीर्थकर गोत्र बांधता है यह कथन श्री ज्ञातासूत्रमें है.

५ जिन प्रतिमाकी पुष्पकी पूजासे संसार दूय होजाता है. यह कथन श्री आवश्यक सूत्रमें है.

६ सर्व लोकमें जितनी अरिहंतकी प्रतिमा है उनका कायोत्सर्ग साधु और श्रावक दोनोंही बोधवोजके लानके नास्ते करे यह कथन श्री आवश्यक सूत्रमें है.

७ श्री जिनेश्वर जगवानका मंदीर बनावनेवाला वामे देवलोकतक जाये यह कथन श्री महानिशीथ सूत्रमें है.

८ श्रेणिकराजाने जिन प्रतिमाके ध्यानमें तीर्थकर गोत्र बांधा यह कथन श्री योग शास्त्रमें है.

९ श्री गुणवर्म राजाके मतारा १७ पुत्रोंने मतारा प्रसारमें एक एक प्रकारमें जिनेश्वर जगवानकी पूजा की है, और उग्रमें उगी तरमें मोक्ष प्राप्त हुए हैं. यह कथन

गणना प्रकारकी पूजाके चरित्रमें है.
श्रीगणेशाय नमः प्रकारकी पूजा श्री गणपतीय मृत्युमें क-
थन करी है.

स्वार्थिक अनेक न्यानमें श्री जिन प्रतिमा पतनेका
गणना करवा है तो सुद्ध पुण्यमें देव लेना.

पूर्वप्रश्न—अन्य भागमें ऐसा कसा कसा बताया है तो
किस प्रकारके विशेषमें देव हो कहेने हीन देवताओं में पूजा
को संभार माने करी तो क्या इन मूर्तवोको सुद्धता पर-
जयाया करनी है?

उत्तरप्रश्न—जो पतनेका कर लेंगे सो जैसे जग
में नयां मोटा बदकन विचार जोसे लोकोको पेंद
जो नयां मोरे !

पूर्वप्रश्न—जग सोदा जायने किसमें निश्च कर है
उत्तरप्रश्न—जगमें भाग्यजग इन लोकोका क-

सा निश्च कर है. क्योंकि एत लोक संभार जग
जो भाग्य है मनु संभार माने करनेवालेको मया

जगवालेको पूजाके कसा तो भाग्यदि करे है सो
भार्यग, और गणपतीय मृत्युमें जगवास श्री मयरी

लेने कर है के पूजाका पत्र-

ह्रियाण सुह्राण म्यमाण् निमेयमा
अण्णामिणाण् जविम्मद्द ॥

प. की कित्त करिया पतनेका पत्र प
जगके, गणपतीय मृत्युमें, पतनेका पत्रके, म
जगमें जगकी भाग्यी जगवाले है.

अब मुझजनोंको विचारना चाहिए कि ऐसों ऐसों प्रसक्त शास्त्रोंके पाठ जो न माने और जोले जीवोंको फंदमें फसावे उनसे ज्यादा और ज़ारे कर्मी जीव कौन है? अवनव्य प्राणीयोंको हम अपने मनमें करुणा ल्याकर हित शिक्षारूपो दो बातों लिखते है कि तुम पढ़पात ठोमके यह हमारा लेख और तुमारी गुरणी तथा गुरुओंका कथन दोनोंही शास्त्रोंके साथ मिलावो और सखासत्यका निर्णय करो क्योंकि इस मनुष्य जन्मका सार एहीहै कि जितना अपनेसें बने उतना धर्म करना पढ़पातमें पमकर क्या ले जावोंगे. इस वास्ते पढ़पात ठोमकर सखासत्यका निर्णय करो जिससें यह मनुष्य जन्म फलीभूत होवे. नहीं तो जैसे आये वैसेही कर्मबंधन करके चले जावोंगे.

इस पार्वतीने जो ११ इक्कीस प्रकारके पाणी आचारंग सूत्रके अनुसार लिखे है सोजी जुठे और स्वकपोळ कल्पित लिखे है. क्योंकि आचारांग सूत्रमेंतो नीचे मजिब लिखे है—

पीडोका धोवण १ अरणीका धोवण २ चावलोंका धोवण ३ तिलोंका धोवण ४ तुसका धोवण ५ जवोंका धोवण ६ ओसामण ७ आनलि (कांजी) ८ उप्न पाणी (गम पाणी) ९ आंवका धोवण १० अंवाम्कका धोवण ११ कवडका धोवण १२ विजोरिका धोवण १३ द्राक्षका धोवण १४ दामिम (अनार)का धोवण १५ सजुरका धोवण १६ श्रोफळका धोवण १७ कैरका धोवण १८ वेरका धोवण १९ आवनका धोवण २० ओर अंबलीका धोवण २१ एत एतम प्रकारके पाणी श्री आचारांग सूत्रमें लिखे है— आंग पार्वती दृग दहिने नामेका धोवण जिनपा

मों गंधकर रूपमों दिल्लीगौरि चम्पल होती है कि स्व-
नहीं मन् विचारों मासोंकों तथा पूर्वपर विगरे जा-
वींमों तन् चालकर अलोक जगामे कौन कौनमी गति-
जानेगी !

तथा याचनी अपनी योग्यमें लिखती है कि " जिनों
द्वेषण आदिसे मुझे करे है तथा नामे आदिककी धोलें
से है तथा मंगलमें शस्त्रकंदि आदिककी नाममें दावते
मुनकों नदरकमेंत्यों तमें लालकें मुके फूलकी तरह
मके मुनमें दावदावके धीमा सेगे है. योंन निनोंन करेले,
जों योंन नदरनको मुनलगा लगामे एउ लगामे है तथा
दि नामन आदिककी नामीयादि अनाम सेरे है उनको न
जानी आदिन अनाकामवन आरके पिछलमें मुन नमके
मुनमें मुनके नममें एउ नामके मर देते है." एउ सेरे जेगमें
तो जो द्वेषण आदिकके मुझे करेते है. तयान वेगण गंधक
है, तयाने करेते है. निनामे शस्त्रकंदीजों नाममें दावते है
अथात् कंदवान गंधक है, इयेंकि मुनी तमें योंन राधेन
है इउ विगण फलें नही है. वे मुने मणके नरशमें दावेंगे:
मया निनोंन करेते, मुनी योंन नदरनको मुन लगा ल-
गामे एउ लगामे से जो नममें तयों तथा कंदु मादन आ-
दिककी नामीयादि अनाम सेरे सेवेनी मरके नमके लयेंगे.
एउ मरे धर्मसेने तयसे श्वात लिखा है ययेंकि योंन नयन
एउक धाने धर्मक मुनेसेते नही है. योंन ययेंकि लिखमें
ययेंकि नाम इयेंकिने अन्व मनाममेंसे ज्ञान आदिकोंकी
को श्वाते मरके लयेंकाते लिख सेरे है एउनु एउने मयक
एउकसे एउके जेगमें नदरनेकी नाममें ययेंकि एउन इउक
आदिन वेगण, कंदुन, मियने, तयने, इउत, नदरन, क-

चाल, आलु प्रमुख रांधते और खाते है. आचारजी मे है, और खाते है. यहतो होनाही असंभव है कि कों आदिककों लूण लगाके धूप लगानेमें अधिक पाप है. अग्रि उपर रांधने भुर्था करनेमें अल्प पाप है. और हं साधु साध्वीजी वैगण, कंदमूल आचारादि खाते हैं, प तीके लिखने मुजिव जे कर इनकी परलोकमें ऐसी गति वेगी तव तो एह विचारे बहुत वेदना जोगे. यहतो हं नहीं सकता हैकि मांसके रांधनेवाले तलनेवाले और भं सेकनेवालेतो नरक जावेंगे और खानेवाले नहीं जावेंगे. अग्रि जैनमतके शास्त्रोंमें वैगण, कंदमूल मदिरा मांसादि वाचीश, अन्नक्षय वस्तु है अर्थात् खाने योग्य नहीं है, लिखा है. परंतु वैगण, होलां, सिंघामे, कंदमूल, गक दी, मुली, गाजर, करेले आदि पर्वोक्त रीतीमें खावेत रकमें जावे ऐसा नहीं लिखा है. इस वास्ते श्रीमती प हुंदकणीकों अपने माने वत्तीस शास्त्रोंके मुळपाठमें प ज्ञानदीपिकाका लेख दिखलाना चाहिए. नहींतो सुर्वी लिखनेका दंभ लेना चाहिये.

तथा इस पार्वतीने जो अपनी पट्टावली लिखी नी स्वकपोल कल्पित लिखी है क्योंकि श्री नंदीजी सत्तावीसमे पाठ उपर देवादि गणिक्रमा श्रमण लि और उनमें पहिले ठब्बीश आचार्योंके नामजी लि अग्रमिंह हुंदकके परुदाद गुरु अमोलकचंद हुंदकनेव टाथकी लिगी हुंदकपट्टावलीमें जो देवांश गणिक्रमाः तरुमनाइम पाठके नाम लिगे है तिनमेंमें कितनेही नाम नंदीमुत्रके पाठोंमें विरुद्ध लिगे है. और पार्वती देवादि गणिक्रमाश्रमण तक सत्ताइस पाठ लिगे है ।

चिनमैही पादोंके नाम नदीमूत्रके नामोंमें न्याय प्रमोजक-
 नंद वृंशकके त्रिषे नामोंमें विरुद्ध है तथा लौकिके देवांक
 गीगा क्रमाश्रमण एक बर्षोंमें पादोंके नाम लिखे है उसमें
 नदीमयों, अमोजकनंद वृंशकके लीं पार्वती वृंशकणीके
 त्रिषे पादोंमें चिनमैही विरुद्ध नाम है सो जल्य प्राणी-
 योंके जागनेके समे नदी न्यायैही पद्मजीयों लिखते हैं.

नदीजी मूत्रकी पद्म
 वती.

- १ श्री सुभमेन्वामी
- २ श्री संवृषामी
- ३ श्री मन्मन्वामी
- ४ सप्तमन्वामी
- ५ प्रमोजकनंदवामी
- ६ संवृषाम्बुजवामी
- ७ वृंशकनंदवामी
- ८ वृंशकनंदवामी
- ९ वृंशकनंदवामी
- १० वृंशकनंदवामी
- ११ वृंशकनंदवामी
- १२ वृंशकनंदवामी
- १३ वृंशकनंदवामी
- १४ वृंशकनंदवामी
- १५ वृंशकनंदवामी
- १६ वृंशकनंदवामी
- १७ वृंशकनंदवामी
- १८ वृंशकनंदवामी
- १९ वृंशकनंदवामी
- २० वृंशकनंदवामी

लौकिकी त्रिषी
 पद्मवती,

- १ सुभमेन्वामी
- २ संवृषामी
- ३ मन्मन्वामी
- ४ गिरिजानंदवामी
- ५ नमोजकनंदवामी
- ६ नववाम्बुजवामी
- ७ वृंशकनंदवामी
- ८ वृंशकनंदवामी
- ९ वृंशकनंदवामी
- १० वृंशकनंदवामी
- ११ वृंशकनंदवामी
- १२ वृंशकनंदवामी
- १३ वृंशकनंदवामी
- १४ वृंशकनंदवामी
- १५ वृंशकनंदवामी
- १६ वृंशकनंदवामी
- १७ वृंशकनंदवामी
- १८ वृंशकनंदवामी
- १९ वृंशकनंदवामी
- २० वृंशकनंदवामी

२५ हेमवंत
२६ आर्यनाग
२७ देवंगणिसूरि

यहनी पट्टावली जैसी अमालकचंद दुंडकके हाथकी लिखी हुई है वसीही हमने लिखदी है.

२५ गोहगणस्वामी
२६ त्रिपगणस्वामी
२७ देवद्वी कृमासमन

यह नाम जैसे पार्वतीने अपनी बनाई ज्ञानदीपिकामें लिखे है वैसेही हमने यहां लिखदीए है.

अब पाठकजनो ! तुम विचार करो के ये लौके, और अमोलकचंद दुंडक, और पार्वती दुंडकणी ये कैसे मृपा वादी और मृपा लिखनेवाले हैकि जिनोकां नंदीमूत्रसे विरुद्ध लिखतां नर नही आया है, और अमोलकचंदको लौकेसे, और पार्वतीको लौके और अमोलकचंदसे विरुद्ध लिखतां नय नही आया है. इस पार्वतीने तो अपने वंश गुरु अमोलकचंद दुंडककोजी जूठ लिखनेवाला सिद्ध करा है. बाहरे पार्वती ! तुं ऐसे लक्ष्णोंसे दुंडकोमे ज्ञानवंत बन रही है. इसकी लिखेली सर्व पट्टावली पूर्वोक्त कारणोंमें जूठी है और इस नरतखंरुमें देवाधि गणि कृमाश्रमणों पीठे तिनकी पट्टावलीका लेख जैनमतमें नही है इस वास्ते दुंडकोने पीठली पट्टावली जो लिखी है सांजी मिथ्या है. श्री आर्य महागिरिकी पट्ट परंपरायमें देवाधि गणि कृमाश्रमणजी हुए है, यहां तक उनकी पट्टावली श्री नंदीजी मूत्रमें है पीठली कोइ ग्रंथमें लिखेलीही नहीं है. और श्री आर्य मुहास्तिकी पट्ट परंपरायमें जो आचार्य हुए तिनकी पट्टावलीका स्वरूप श्री जैनतत्वादर्शनामा ग्रंथमें

कथाने लिखा है.

शास्त्री लक्ष्मणजीकी एककी बर्मा दया शार्दा हैकि ए
 चाही दुर्गा यैमिनाउता क्या जाने क्या बुरा फल पा-
 ती. एसाए पाप दुष्टकोला लिखा दुष्ट पद्मावली है, निम्न
 कथा हैकि "अर्जुने शयको दिक्वा लक्ष्" अर्थात् 'अ
 ने अर्जुनो देहा लार्धी' और धर्मनामनेनी अपने आ-
 री शयको लार्धी. लिखनेके हेतुक श्रावरीने धर्मनामके
 लार्धीका एक लार्धीका एक उपाया है निम्ननेनी लादि
 धर्मनामका नामनी लिखा है परंतु धर्मनामका गुरु नहीं लि-
 खा है. क्योंकि कुरु पौरवीमें लिखा है कि धर्मनामने सर-
 वेज नाममें लक्ष्मणजीकी मुक्तकी शास्त्रीमें शीला लीनीयौ
 एव एव नाम धर्मनाम नामनीको एदनी विचार करना
 शास्त्रीको धर्मनामकी को स्थापना करलनी और लक्ष्मणकी
 स्थापना नहीं करनी यह कुरु पुराणोंका काम है? नहीं
 कुरु धर्मनामनेनी दुर्गा पद्मावली लिखनेमें क्योंकर लक्ष्म-
 णजीके नाम धर्मनामने उलटि मति जाना और नर नो
 कुरु एसा नामकी नामका नाम नामको प्रमाण फरे और
 धर्मनाम है ही लक्ष्मणनामको और धर्मनामने लीने. नामे
 लक्ष्मणकी.

धर्मनाम नाममें लक्ष्मण लीने नामे एसाए लक्ष्मी नाम
 लीने लिखा है एव लक्ष्मी नामकी नाम धर्मनामका नाम
 है "लक्ष्मीका" नाम है लीने लक्ष्मी नामकी नाम ली-
 ने लक्ष्मी नाम है, लक्ष्मीके पौरवीमेंनी लक्ष्मी नाम
 के नाम लिखा है लक्ष्मीके नाम धर्मनाम लीने लि-
 खा है.

लक्ष्मणने लिखा है.

मा मातुलाः समेतः त्रिभुवः पतीति, तत्र
 तुमा तत्र त्रीं मातुलाः तत्र तत्रा त्रिं मातुलाः
 तत्रा नाम त्रिणः

- २० ग्यानां नमो ही गीमन्तः क० तमे किम किम तं उ
 मता नाम किम नामो कर्मणः गीको ग्यामा क
 रणा चला २०
- २१ उमउगीको कल्प तांनणा ननेर फोमने वाजागात
 करणा
- २२ उमेमे समोमरणगपना. उमरा उमा गपना संभे
 उमको डंड चला हे
- २३ प्रमांजनी गपते नही वेदकल्पमे चली हे सो को
 सवय लि०
- २४ दिमा वेठे समोमरणका कथा च० कहां रपणा लि
 २३ दिमा गइ अमुची टालन लगे मुहपती रपनी लि०
- २४ मितमाजी कौंन कौंन अयस्ताकी मानते हो सो लि
- २५ अप थापना नपेपा मानतेहो के नही
- २६ जगवानर्जाका गोमालामे थापना नपेपाहे के नही
 नही तो कयोंकर नहीं जो हे तो अप गोसालेको म
 उर जो थापना नपेपा माने सो समझीष्टी हेके मि
 षीष्टी हे अप कथा जानतहो मय लि० पुलासा
- २७ धारकानगरी दाहा हानेकी चली प्रत्माजी मंझन
 कथा कथा हाल चलाहे लि०
- २८ कृश्रजी डंडोरा फिराया दिप्याके वास्ते पृत्त
 वस्ते मंझकीके वास्ते कथा कथा हुकम दिया हे
- २९ नेदनाथजी म्हाराजने कृश्रजीको कहा है के कृ
 सरिपा होवेगा उस वपत किसने वदना करी हे
 सका नाम

- ७ महानगिनदीका ५ नदनीपासको बयोकर नदी मानने जो माननेहो तो कितना माननेहो जो पृथ्वीकागी पुता हो कसो कया कहाने न्यानिमीनमे जो कान्यनजा शानान्तमे उनका कया चजन चजाए
- ११ दिनको गिर दहके नदना कितना कितना दिन लग १७ माछीमे ६ नदीमे कितना जियाह पृथ्वीमा
- २२ मय पदागेक बाम्मे कपटाके ऊँउ बोल मय पृथ्वीमा लगवानेही सुने मयमे पानी कौन मायमेहो जहा जि०
- २३ मय पानी कसो कसो जेणा प्रोचनका २७ मकागे ले वनी मकासका चला हे जेणा सो रपो क नही होइ नि०
- २४ पदमेही जो जाम्या मनन करी के द्या कौमीयोही पानी जाम्यामे जाम्याथा रहाने पाठमे लि० दंड क मयो नही कानी जाम्याक मयक हे के विरायक हे
- २५ महाभीमको नाम जमजा श्रावक श्रावहां उगा मयका नाम मय राम काम जमवर मयहन व्याधिक जियना. देवलोक जाणा मयकय गा मय जाणा मयो के जम जिमे विना नही मानन प्रीतमं मय नि शंरामका जि०
- २६ श्रावकको नाम रानीपाके नाम मनेपाके नाम देम १२००० एनाके नाम दूट बालसाका जुदा रुदा
- २७ श्रावक मयदेवाही मयो मयनात प्रदेवाको जि०
- २८ जमवानकीके मयमाने वीन वीनमा मयमे पुता कसो मये मय मय पुता कसोमेहो के नही मयो गिमे मय०७७०
- २९ मय १२ मकागे ले मनी मका मयमेहो मयो
- ३० मयको जमवानकीके मय मननेहो के कम मया ही

कम जाना माननेका तो गया मन्त लि० हे

४१ जगवानजीके दरमण गरिपा मन्माजाका हे ते
कम जादा

४२ आपना जगवान जानके त्यंडके जेंडी लमांणका
कया फल

४३ यागीको ज्ञाग करावे तथा जगनी माने कया फल

४४ जगवानजी एक पेत्रमे २४ जा वज्जे रहेतेने के नही

४५ अँगगका मुल पाठ किताणा हे टीका कितनी हे कि-
सकी करी होइ हे आप मव सच माने के नही जो
मानो तां कितने पर्वधारककि हे टीका सो जो दम प-
र्वथी जो उनोने किकृत करी हावे उमका मसकर
माने मनावे विना आलायां विना प्राणित मुं हावें

४६ जो ग्रंथ हे सची सख हैं किसके वचन हे

४७ जो मंड्र वने हे सो किसकी अग्यासे वनहे उन्नउपा
सरेका नही देणा कयोके उपाश्रमेही धर्मध्यान कर-
नेके वास्ते किसीका वनवाना चला नही काइएक
जगाकी ठीक नही जहा रहे उसका नामज्नी उपाश्र
केते हे

४८ सत जगा धन परचना क० अगे केसने परचाहे आ-
नंदजी कामदेवजी प्रदेसी राजाजीने कहा खरचाहे

४९ जिसके घर सुतक होवे उसके घरका आहार नही लेना
उसके घरके समायक नही करे कां लि०

५० मपण मास तुलसकी तरां हे लेते होके नही कितने
चीरका लेते हौ ठाठ अनठनी सराव सरीपी किसी
जगते भीर्मासी रोटी राथ पाते हो के नही क्या

- पानजी कीयां रत्न सोनेकीयां गोत्मजीका जाए
 त्माजीकीतिणे काल लग रहे
- ६६ जो सुरयाव देवताजी पृत्मा पृजीया १०८ सिधां
 विच उन सर्वोका कया नाम हे लंबी चोडी रंग उनके
 अग किस किसकी हे
- ६७ जो माणवचेतमें दाडां हे सो किस कीया हे तिय
 करो कीयां तो ४ चार इंद्र ले जात हे सो किसकी
 यां हे सासतीयां हे के असासतीयां हे लंबी मोटी लि-
 सव देवलोककीयां लिपणा
- ६८ प्रत्मां बनानेवालेको कया फल
- ६९ प्रत्मांजी मूलवेचणेवालेको कया फल
- ७० मंड्रकीयां इटां ढोनेवालेको गंधेको कया फल
- ७१ मंड्र बनवाने वालेको १२ देवलोक जाणा कहा लि०
- ७२ मंड्र बनवानेवाले कया फल कहांजावे
- ७३ अपकी पटावली कोनसा हे जिसकी अपकमेंते हो
- ७४ ८४ गठमां किस गठमे हो गठ कामे चले हे
- ७५ सतंवरी रुगंवरीकी प्रत्मा माननीका लि०
- ७६ जगवान चेतन के अचेतन प्रत्मा चेतनके अचेतन
- ७७ नसीतमे चला हे चणे मात्र पृथ्वी हणे ढणावे अण
 मोदेतो मंम जो मंड्र बनवाने वालेको चला जाण
 के नही
- ७८ इस्त्री पृत्माजीका संगटा करे के नही
- ७९ इस्त्री पुजा करे के नही कपडे सहत के रहत
- ८० इस्त्री सनातर वणे के नही
- ८१ इस्त्री ढोलकी उने वजावे के नही जगती के वास्ते
- ८२ तुंगीयाके श्रावग पृत्मा पुजी के नही

- ३ गणाय वेदकी वसेका कथा अर्थ है
 जौपदीजी एमा पुजनके अपन नमदहन के मि-
 ल्या रहन
 यन्माजी नीन यक्षार्वायां ३ मंतवरी हगंवरी चोहद
 येननी कौन मय कौन अमन खिचने विथंकराकीया
 ममा रामे ये किसकी पुत्र
 सर्वांगीनी ममा सर्वांगी कथों नहां पनाते
 जो अन्धाममर्जी के भक्त बुदेरापजादों गुजराराजे
 जेमे ११ मों मयहे के लगन्य हे जो माखु मय के
 प्रमद हे तिसके अन्गारे पानों के नही
 तासार्थ अत्र बांदे के नही अन्धामर्जीमि मृतके पुजन-
 वात्त जागे कथा सोना कथा लिपा हे
 ४ चौथे अन्धामर्जी मानक विग्रमे १० पापमे माद वादके
 अन्धामर्जी मानकी राग्या हे के नही
 ५ अन्धामर्जी एगो बुझामि पूजा तिसमे हे ममगनमे नही
 त्रि० कथों पुन्याय छापरी मीदी पुन्यापना देव हो
 एम जागे नही त्रि० अन्धामर्जी नीन पनांरथका
 ममद त्रि०
 नंदर वला रंग हे मि कन्धमे कथा रंग हे
 अन्धामर्जी त्रि०मे हे अन्धामर्जी ममाके के पापमे
 अन्धामर्जी अन्धामर्जी कथा ममद पुन्यांजीका कथा
 अन्धामर्जी हे १० अन्धामर्जी ११ का कथा अर्थ
 कथों अन्धामर्जी के नही
 अन्धामर्जी कथा कथी हे
 अन्धामर्जी कथों के अन्धामर्जी नही कथने त्रि०मे
 अन्धामर्जी हे १२ अन्धामर्जी हे

ए० सब सूत्रोंका नाम जो अब मानते हो सबका मुलप
टीका सबकी लि०

ए० जो आत्मारामजीने जीवनरामजीको चिठी जेजीए
उसमे लिखा हे के सूत्रमिनुं इतने मिलेहे के गेएनीं
बाहर हे सो गणतीसं बाहर कितने होते हे दस प
मजूद हे एसे फूठ बोलएवालेसे चरचा दखसत
के नही

१०० उसमे लिपा हे के २४०० वरसके मंडू पडे हे २५००
से मंदर उस वपत उस वपत जो जरथजीकीपां
प्रत्माथी सो अज्ञ हे के नही तो क्या सबव हे
१०००००० लाप श्रावग अपने लिपे हे सो जगवा
नजी कितनेथे सो क्या क्या लिपते हे जिसके विचसे
सच्च नकालना मुसकल हे फिर कहते हे फेर कहते हे
के चरचा करो सो क्या बात हे मुगधजनाके जरमाए
करते हे जितना चिर कोइ मिलदा नही जिस
कोइ मिला उस वपत पवर नही ठरो के नही
नाका जवाव इस नही लि० जो तीमीयाके न
हाए नही देए लिपे सूत्राके अनुसार टंणे प्रश्न
सं० १९३० चैत्रमुद्री पंचमी दमपत मोहनलाल
त्मारामजी कौ लेखकका बहु छप हे लीजो चतर
वार अदका उठा जो लिपा मिठामि डकडं बहु
शति दुंडक प्रश्न समाप्त ॥

येह ऊपर लिपे हुए प्रश्नों फेर जहां इनके उन
लिपेगे वहां स्पष्ट लिपेगे कि जिममें वाचकवर्ग हों व

मक्ष-द्वय स्थापने योगे चंद्र मक्षी जिघत्सेम को प्रेम-द्वय
जिघत्सेकी मीनद करनेका क्या प्रयोजनथा !

सुख-श्रेष्ठ जिघत्सेका प्रयोजन क्याथा कि मंगलीजोक
के) कुछ जाणके नहीं है जो मंगलीके (२००) मंग
जाणके है सो विश्व-गर्भके ज्ञाने जिघत्सेका पद है
जो निमकी जाणकी बगल कुछ जिघत्सेकी नहीं
है सो फल के ज्ञान मंगल-माहृदका ज्ञाने किमती
होगे ? प्रती हीम आधर ! हीम माहृदकागैर ज्ञान-
पन बंदे हो ! प्रथम ! प्रथम ! प्रथम ! --

पदागत श्री ग्यान्कारामतीने इन मक्षोंके क्या क्या
चुनर शीये है

र तो इन मक्षोंके चुनर हीये है सो मक्षोंके मागली
रम जिघत्से शिवाये है मक्षोंके ॥

मक्ष माय मक्षी दवा-रमा ; मीनके नाने सुने म्या-
न्कारामतीने, जे ज्ञान-माहृदकी नाने है कि ज्ञान-माहृद
दक्षिण-रमाये है. सो मक्ष मक्ष रमाये है मक्ष मक्ष
ज्ञान-शीयाने किनु ज्ञान-रमाये नहीं करनी, मक्षी म-
रमा, मक्षी मक्षी मक्षी चुनर मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी
मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी

1 2 जिघत्से माहृदके मीनद प्रमागय सुने सुख-द्वय ज्ञान
मक्षी

मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी
मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी
मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी
मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी
मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी मक्षी

प्र० ए मृपने उतारणे, घी चमाना, फिर जिलाम कर
और दो तीन रूपैये मण बेचना, सो क्या भग
नका घी कौमा है सो लिखो.

उ० ए स्वप्न उतारणे घी बोलना इत्यादिक धर्मकी प्र
वना और जिन ड्यकी वृद्धिका हेतु है. धर्मकी
जावना करनेसे प्राणी तीर्थकर गोत्र बांधता है
कथन श्री ज्ञाता सूत्रमें है. और जिन ड्यकी वृ
करनेवालाजी तीर्थकर गोत्र बांधता है यह कथन
श्री संबोधसत्तरां शास्त्रमें है. और घीके बोलने नाम
जो घी लिखा है तिसका उत्तर जैसे तुमारे ज्ञाना
रांगादि शास्त्र जगवानकी बाणी दो बा न्यार रूपै-
येकां विकनी है ऐसे घीकाजी मोल पमना है.

प्र० १० माला जिलाम करनी, प्रतिमाजीकी स्थापना क
रनी, और जगवानजीका जंमारा रगना कहां लिखा.

उ० १० मालोद् घटन करनी, प्रतिमाजीकी स्थापना करनी
वया जगवानजीका जंमारा रगना यह सर्ग कथा
शारदादि शास्त्रमें है.

प्र० ११ जो पुण्यत्रोक प्रतिमा पुजते है, माघ कदां
करना आप क्या जानते हो. और उनका जो
पुण्यदं चमका आप मजादेका बंदणा करके
करना क्या समयके और नहीं हमें तो क्या मपन

उ० ११ जो पुण्यत्रोक प्रतिमा पुजते है, माघ कदां
करना प्रतिमा पुजते जाना जाननाह. उनके
पुण्यका मजादेके मजादेके और जो
के पुण्यके मजादेके श्रीपुण्य मानमद

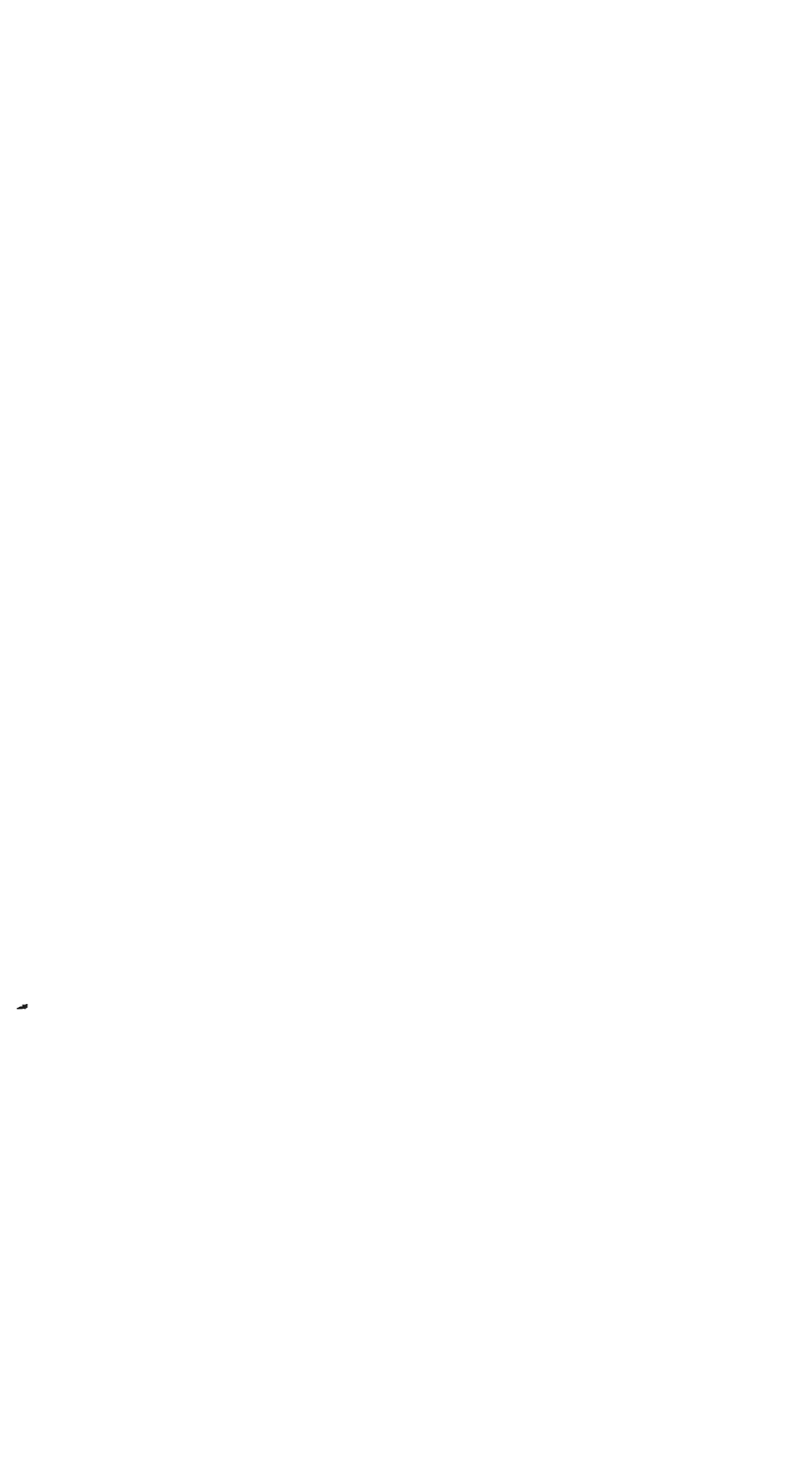
प्र० १२ जगवानके वरदान कथा

यस्य नाम कथा है
 २३ उक्त वर्तमानमें एक स्वयंका फलका मूल पाठ
 और अन्य कुछ यह प्रकृतियोंकी नाम लिख पाए हैं
 और मनु नियममें मय दखाया है
 २४ कर्मवर्तते माय प्रकृतों त्वेव कर्त्ता नियम

जिसी माय प्रकृत कर्म प्रकृतियोंके जो
 स्वयंके नाम प्रयोग कीजते उनका वर्तमान
 वर्तमान नामोंमें है, वर्तमान ती कर्मवर्तते
 त्यों में प्रयोग करा है, कर्त्ताह, और त्यों
 का, जालीके वर्तमान,
 और नामना, वर्तमान, और हीनवर्तित
 : कथा लिखा है
 (और प्रकृतियोंके श्राव्य नामों पर कर
 निर्देश श्राव्य है
 उक्त वर्तमानके, २५ वर्तमानमें प्रकृतियोंके :
 ७ नामोंका वर्तमान लिखो।

नामों कीवर्तितः

कर्मवर्तित वर्तित, जोहो वर्तित कर्मवर्तित
 वा कर्म वा वर्तित, वर्तित वर्तित वर्तित । २६
 एक नामोंके लिखा है कि माय वर्तित, वर्तित,
 वर्तित वर्तित वर्तित, वर्तित वर्तित, वर्तित, वर्तित,
 वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित
 वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित
 वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित
 वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित वर्तित



- करोगे तब तो हम तुम्हारा भंडार खाता मानेंगे नहीं तो तुम्ही अपने भंडारों में क्या लिख होता है.
- १० २० नमनाथजी महाराजने कुशमीकों जिस वचन क-
 लाया कि हे कुश तुम्ही मममरीखा (मेरे महाराज)
 होना उम वचन किजने पंदना करीखी उमका
 नाम लिखो.
- १० २५ उम वचन कुश महाराजकों पंदना करी वा नहीं
 करी उम मरणी शान्ति कुशनी चला नहीं है.
- १० ३० महानिशीधमीका २. पांच वा नवनीतमार उ-
 च्चयन करीकर नहीं मानेहो श्रौंग जो मानेहो तो
 किमनेमें मानेहो तथा उममें प्रतिमागीकी पूजा
 कर करी उमके नामे क्या कहा है महानिशीधमें
 का उमनाथनाथका क्या चलेन चला है.
- १० ३५ उम मरणीवमार मानने है श्रौंग जो उमने कहा
 है सो मन है श्रौंग कवलमनाथका भेना चलेन
 सो श्रौंग नरनीतमारमें लिखा है वसेर उमकों पूजा यह
 उममें माफूम होना हेरि नर मरणी-शीधम उ-
 मने न-गी हो श्रौंग उमों महानिशीधम होहो श्रौंग
 उमने मानेहो तो महानिशीध श्रौंगमेंहो उम मरणी
 पूजाका उमने है सो कसे मरणी मरणी उमनेहो तथा
 उमने किम मानने उमने उमने लिखा जो किम
 उमनेहोका कथन है उमने उमने उमने श्रौंगे पूजा क-
 रीका उमनेहोहो सो पूजा उमनेहो उमने उमनेहो
 उमने किम उमनेहो उमनेहो उमने किम उमने श्रौंग जो
 उमने उमने है उमने उमनेहो उमने उमनेहो उमने
 उमने किम उमनेहो उमनेहो उमने उमनेहो उमने

नहीं होती है. जो तो तुमको पंमिताईकी चाह हो और सुधे रस्ते जाना होवे तो किसी गीतार्थ सहस्र सेवा करो. जिससे ऋवरूपीजीम कूपसे निकल जाय
 प्र० ३१ दिनमें शिर ढकके चलना कितना दिन चमेताः ढकना ? २ महिने और ६ ऋतुओंमें कितना कितना काल सो लिखना.

उ० ३१ श्री ऋगवतीजी सूत्रमें कहा है कि सघले दिनमें उस पम्ती है सो उसकी रक्षाके वास्ते हमारे पूर्वाचार्योंने इसतः हकी मर्यादा बांधी हैकि गरमीमें दोषमी दिन चमे तब तक और सांपको दोषमी दिन रहे जबसे बहार जाना होवे तो शीर ढकके जाना जबतक सूर्योदयको दो घन्टी होवे तबतक, इसी तरेहसे चतुर्मासेमें ६ ठेघमी दिन रहे जबसे लगाके ६ ठेघमी दिन चमे तब तक, और श्यालेमें ४ च्यार घडी दिन रहे. जबसे लगाके च्यार घन्टी दिन चमे तबतक शिर ढकना इस वास्ते हम शिर ढकके चलते हैं परंतु तुम दयाधर्मी कहातेहो और खूले मञ्जेके साथ फिरते हो खबर नहीं कितनेही अप्कायांके जीव मारदेते होंगे सो तो ज्ञानी महाराज जाणो. तथा हम पुठते हैकि तुम रात्रीको शिर ढकके चलतेहो सो किस शास्त्रकं मुजिब जेकर कहोंगेकि उसकी रक्षा करनेको ढकने है तो हम पुठते हैकि ऋगवतीजी सूत्रमें सारा दिन उस पम्ती लिखी है सो मानतेहो के नहीं जो नहीं मानतेहा तोतो हमको पुठनेकी कुछ जरूर नहीं है क्योंकि तुम ऋगवतीजीका कथन नहीं मानतेहो हम वास्ते जैनमतसे बाहिरहा और जेकर मानतेहो तो

मुनाँ मागेदिन गिर टकके चलना लाडिए इमि वा-
ने ह्य मुनाँ वलने हेकि किम महम्की सेवा करो
मोँ नान्दर्य क्या है मो मगजा.

२५ कपडाइ ककके, जूठ बाँजक. और जगवानकी
मोगंठ जूठी पाकर मत बधावना कौनमें साख्ये है.

२६ मत ब्रीचवे पाखे जूठ नदी धाँजना, कपडाइ नदी
करनी, जगवानकी मोगंठ नदी पानी भर सर्व सा-
शोका मगजा है.

२७ नया पाणी कगके लेना और २१ इरीन मका-
गीइ मणे पाणी धाँवणके लेने नले है मो नयाँ
परी लेने हो.

२८ इइ जो नयापाणी लेने है मो कगके नही लेने
है और २१ इरीन मकाके पाणीके बिचरो नया
पाणी लेना लिखा है नया औरनी पाणीके लिखे
इइ पाणी शुक हमको पाटुम पमने है मो प्रदाण क-
रने है परंतु मकानिइम शिम राणीका काल पहोण
जावे मो नही लेने है परीन मुक लोक जो मकानिओन
जिमोरे किनलेगे मोर अन्वज सेने है लेना पाणी मग
मगके लिखेने हउे जोमे लिखा मोगन संवेदे और
पिनीने मो मो इइके न नयाके नही पवे है.

२९ अणे बीजीने जगवान मंगुर मंगे कीमोमोकी
इशत पाणी, पाणामोमोके मगजामो मणी मणे मो पाण
मोरे इइको मकानिओन नही करको अगवाने मगवा-
वक इइके लिखेने है.

३० १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०.



गवानजीके कौनसे कौनसे साधु मंदिरमें पूजा क-
 1, श्याप पूजा कगतेहो के नदी और आगे जिसने
 इ होके छमका नाम लिया।

जगवानजीके सर्व साधुओंने मंदिरमें छव्यपूजा
 1 करी है और हमजी छव्यपूजा नहीं करने है
 जो गृहस्त्री लोग पूजा करने है सो परे कदनेमें
 करने है किंतु जैनशास्त्रमें लिखे सुतिय करने है
 भागिनी जगवानके शास्त्रोंनेही पूजा करवाए है
 कि मात्र माननेवालेकों तो जो शास्त्रमें लिखा है
 गर्वही मन है क्योंकि पीतगाग कदेनी जगत क-
 नही करने है.

२७ मकारा प्रकारगटि घने प्रकार करके पूजा क-
 करतं वाली है.

मकर १७ प्रकारकी पूजा ज्ञानार्थी मूरमें तथा
 भक्षिय मूरमें लिगी है. अष्ट प्रकारी पूजा महा-
 तिय मूरमें लिगी है. मकरा प्रकारी, अष्ट मकरा
 १, दहीन प्रकारी, अऊर अष्ट १०७ प्रकारकी
 आत्मरक्षाय मूरमें लिगी है सोप जेन आत्मरक्षि
 वा पूजा मकरा प्रकारि मूरमें है.

सर्वकारकी जगवानकीके मुख्य शान्तिमूर्ति वस
 मूर्ति १ जो वृष प्रकारि मानवही जो मकरा मकर १७
 1 लिगी.

२ श्रीजगदीश्वर मूर्ति १७ प्रकारका मूर्तिके मकरा मानव है
 मूर्ति २ श्रीजगदीश्वर मूर्ति १७ प्रकारका मूर्तिके मकरा मानव है
 मकरा मानव है मूर्ति ३

३ जगवानकीके मूर्ति ३ प्रकारका मूर्ति मानव है मकरा मानव है

शनमें है कि कमज्यादे.

उ० ४१ दोनोमेंसे जिसके देखनेसे अधिक चित्ताह्लास।
सोइ अधिक है.

प्र० ४२ अपने जगवान जानके तालेमें रखनेसे व
फल होवे.

उ० ४३ प्रतिमाजीकों जगवानकी आकृतिजाणकर रक्षाके
वास्ते ताले लगाने मां जक्ति है और जक्तिता फल
मोक्ष है जसें शाखाओं जगवानकी नाणी जाणके
रक्षाके वास्ते तालेके गंदर रगने.

प्र० ४३ सागीकों जोगी करे तथा जक्ति माने तो क्याफल

उ० ४३ जे सागी है मां किसीका कग जोगी नहीं हो।।
हे और जो उसको जक्ति पूजा करे उमहां महाफलही

प्र० ४४ एक कृत्तमें २४ जोगीम जगवानके जीव एकरे

इनकी भेद्यता से वे पाए हैं; चौदापूर्वी, दशपूर्वी आदि
 कौनों नहीं हैं. जैकन तुम इन पूर्वाधीके बिना औरका
 कथन नहीं माननेहो वह तो तुमको कोन्ही पाए
 मानना योग्य नहीं है क्योंकि तिनोने प्रथम पाए लिखे
 वह चौदा पूर्वपाए हीन इन पूर्वपाए कोन्ही नहीं
 है, अथवा लिखने सेमे मले नोचमें औरकम माननेहो
 उन जसने तुम मानिका अह मित्र होन्ही.

यह १६ जो ग्रंथ है तो मरुती मय ही ज्यो हीमने इनके
 यह १६ जो जो ग्रंथ है न मनके जानावोने से है तो म-
 र्दही मय है.

यह १७ जो मंत्रिय मनने है तो जिनकी आहारेमें वने है,
 अथवा गुणधर्मना नहीं वेना क्योंकि गुणधर्मना धर्म
 ध्यानके पाने जानाना नहीं जना है जसने से गु-
 णधर्म नाम गुणधर्म कहने है जसने जिनकी मानना
 निराम नहीं

यह १८ जिनके अंत मेंही वने है जसने ही ज्यो जसने
 जसने तो मरुती जसने जसने जसने जसने

यह १९ मरुतीकी अम जसने जसने जसने जसने जसने
 जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने
 जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने

यह २० जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने
 जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने
 जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने
 जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने
 जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने
 जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने जसने

धामे रत्नवाहुज मितिवन्नात । इम वाग्ने, सुधा पु-
तोंको श्यावाय रमाना नदी नाहिए क्योंकि मैनमनेके
आनी सुजिय गही वस्तु एउ चीनोम मय्य पोडे जीव
मगक होयानी हे अरि जीव मंगक यस्तु सुधा पु-
तोंको रानो योग्य नहीं है जो गावे उनोकी वस्तु
इस्तु सुधा तो उन मानवालेहो मने रत्न वाया र-
के लो एडे नहीं जानते है. १०

१० गोलरत्ना नाम कधी धर्मश्राद्धिक जिनके जैन
मार्ग विद्वान कहते है सोनी लज्जक है क्योंकि वमे
इली एउ जाम एउमे परमेवमे एगदि मिनानमे के-
गही नाम सुधम जेव सुगम होताने है एम वाग्ने
विद्वानो एते योग्य नहीं है विद्वानेवनाः सुधमाः
एते वपनात, लज्जता नाम गोमे एति वचनानः १०

११ इवाक (धामे) यदनी धनक है क्योंकि
एमेके एतेमे निष्ठा एते वाग्नेवनी इति गोनी ए,
१२ धाम एगा सो जीव नाम न लज्जता एति
केमा एतेवन एउ सुध नहीं एतेना क्योंकि उनीव
एो एते एतेना सुध एते एते एते एते एते एते
एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते
एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते

१३ एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते
एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते
एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते
एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते
एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते एते

६ गो मात्र यह काम करते नहीं हैं, परंतु
 दिन द्वावें तथा पंद्रह न बनारसेवालेगों
 योगे यह विधीना जंतुजात्रमें लिखा नहीं
 ७ गो मेघ हेतु श्यपना शक्ति होने से
 ८ गो नदी में बनारसेवालेको जन्मोदना को यह प्र-
 ९ गो श्यपनाका श्यपन जन्मोदनाको लिखा है
 १० गो प्रतिघातीका श्यपना को नली
 ११ गो प्रतिघातीका श्यपन को यह श्यपन श्यपना-
 मुखसे है।
 १२ गो श्यपना को नली उपमें श्यपन को नली मन।
 १३ गो श्यपना को श्यपन श्यपना श्यपना श्यपना
 जन्मोदनाको
 १४ गो श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना
 १५ गो श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना
 १६ गो श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना
 १७ गो श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना
 १८ गो श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना
 १९ गो श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना
 २० गो श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना श्यपना

- १० ८५ प्रतिमाजी तिन प्रकारकी है श्वेतांवरी, दिगं और बौद्धपतकी इममे मस कौनमी और असस नसी है तीर्थकरोंकी प्रतिमा घरमे रखे के नही किमकी पूजे.
- १० ८५ जैनशास्त्र मृजिव श्वेतांवरी प्रतिमा मस है : घरके मंदिरमें तीर्थकरोंकी प्रतिमाजीकी पूजा करे
- १० ८६ मल्लिजीकी प्रतिमा स्त्रीकी क्यों नही बनाते है
- १० ८६ मल्लिजिनकी प्रतिमा बनाते है जिममें शापमे विमा ननावनी लीयी है उमतरमे बनाते है
- १० ८७ जो आत्मारामजीके प्रश्न ११ वेदेरायजीको गुं वाले जेजेथे सो मस हैकि पमस, सो शास मस कि पमस जिमके अनुगारे जिमे है पांर सो नवेरोहि नही
- १० ८७ वेदेरायजी जाने वा आत्मारामजा जान जे तुमहो ऐं ऐं करेकेहो गया जकर है.
- १० ८८ कारणपं जय सोने के नरी या आरायजीम मस पवनमने पागे गया जान विमा
- १० ८९ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९० जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९१ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९२ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९३ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९४ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९५ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९६ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९७ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९८ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० ९९ जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि
- १० १०० जो आत्माराम जाने के वनक समीपं जाके कि

नदी लिखनी क्योंकि सुस्पष्ट वीपद्वीपकी
नदीना देवदो इत वास्ते सम्पत्तमें नदि लिखनी
आयकोंके नीचे मन्तोन्धका स्वल्प लिखना.

३१ ३२ पूजा सम्पत्तकी करणी है और बिना सम्पत्तको
अंगीकार करे वन अंगीकार होते नदी देग पाकि नदी
अंगी सम्पत्त पूजा समान है और सुल बिना प्राया
शेक नदी है इत वास्ते पूजाकी वनोंके गंनगनही
तापनी और श्रावकक विन मन्तोन्ध वापांग सु-
धमें देग लेने

३३ ३४ मिश्र जगदानका क्या संग है और मिश्रचरमे
क्या संग है.

३५ ३६ मिश्र जगदानका कोर संग नदी और मिश्रचरमे
ए संग संग है.

३७ ३८ अंगे द्वापके सिंगमे, नीवकी मन्तोके कीकने
आपणिये.

३९ ४० अंगे सिंगके जगदानकी आशामें है. नदी क्या
और नदी सिंगमे.

४१ ४२ नीवकेको जगदानका क्या सम्पत्त है और मन्तो
क्या संग संग है.

४३ ४४ नीवकेको मन्तो देवदो अंगे को मिश्रचरमे
क्या संग सिंगकेको मन्तो नदी को पूजा: अंगे
क्या संग संग संगे.

४५ ४६ मन्तोके मन्तोके ४७ ४८ मन्तोके मन्तोके
क्या संग संग संगे है.

४९ ५० मन्तोके मन्तोके मन्तोके मन्तोके
क्या संग संग संगे है.

- २५ सुत्तागमे १ अज्ञागमे २ तज्जयागमे ३ इनमे अगम किसकों कहना और उनका स्वरूप लिखना.
- २६ दीक्षा देनेकी विधि किमतरे है कौनमा पाठ पम् दीक्षा देतेहो और वे पाठ कौनसे शास्त्रमे है.
- २७ सम्यक्त तथा श्रावकोंके व्रत देनेकी क्या विधि और किस शास्त्रानुमार है.
- २८ श्री अनुयोगद्वार मुत्रमे तीन प्रकारकी निर्युक्ति कह है "निक्षेपनिर्युक्ति १ उपोद्घातनिर्युक्ति २ औ मुत्रस्पर्शक निर्युक्ति ३" इन तीनोंका क्या स्वरूप और मुत्रागम हैकि अर्थागम है.
- २९ यह तीनोंही निर्युक्ति एक शास्त्रके वास्ते हैकि म शास्त्रोंके वास्ते है.
- ३० जगवतीजी मुत्रमें तथा नंदीजी विंगरे यणे भाष्यमें अनुयोगकी विधि लिपी है ॥ यतः ॥
 मुत्तजो गलुगढमो, नीचनिर्युक्ति मीगच जणीच ।
 नद्व निरविगेमो, एमविहो हंर अणुचमो ॥१॥
 एग माथाका वात्पयार्थ यह हैकि मुत्र और सुत्ता अर्थ यह पथम कहना, उर्जीवाम निर्युक्ति निर्विष क हना और तीमगीदपं, निर्विषण कहना एग विविध अनुयोग होना है. एग माथाम जो निर्युक्ति और निर्विषण कहा है सो कौनमें आगममें है ना जना एग स्वरूप है.
- ३१ निर्युक्ति और निर्विषण यह दोनाका कता करे है और यह दोनोंही कहा है.
- ३२ लोकात् ३१ मुत्र वासे है और नाहीकाना ३१ म कौनमें मुत्रमे और २२ इनाना ३३ ३१ म

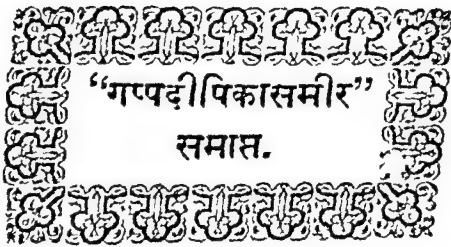
१. १०० गीतमें आतमें तथा व्यवहार मंत्र जो लौकिके
 अर्थ मानाया सो नृपने ७७ टोलेवाजान कौनमे प-
 २. १०० गीत माना है तथा इन दोनोंमें मजा कौन
 है सोई हूज कौन है सो सर्व मयाण सहित लिखना.
 ३. १०० गीत मायुजीनों वोगरायकर ७७ टोलेवाजाने
 लिखने योगरायकर निक्षय करा है.
 ४. १०० गीत मायुजीके अर्थ किंग पानों धारण करने और
 अर्थमें पहिले मय, मुनार्थ, नियुक्ति तथा निधि-
 मयका धारक कौनया.

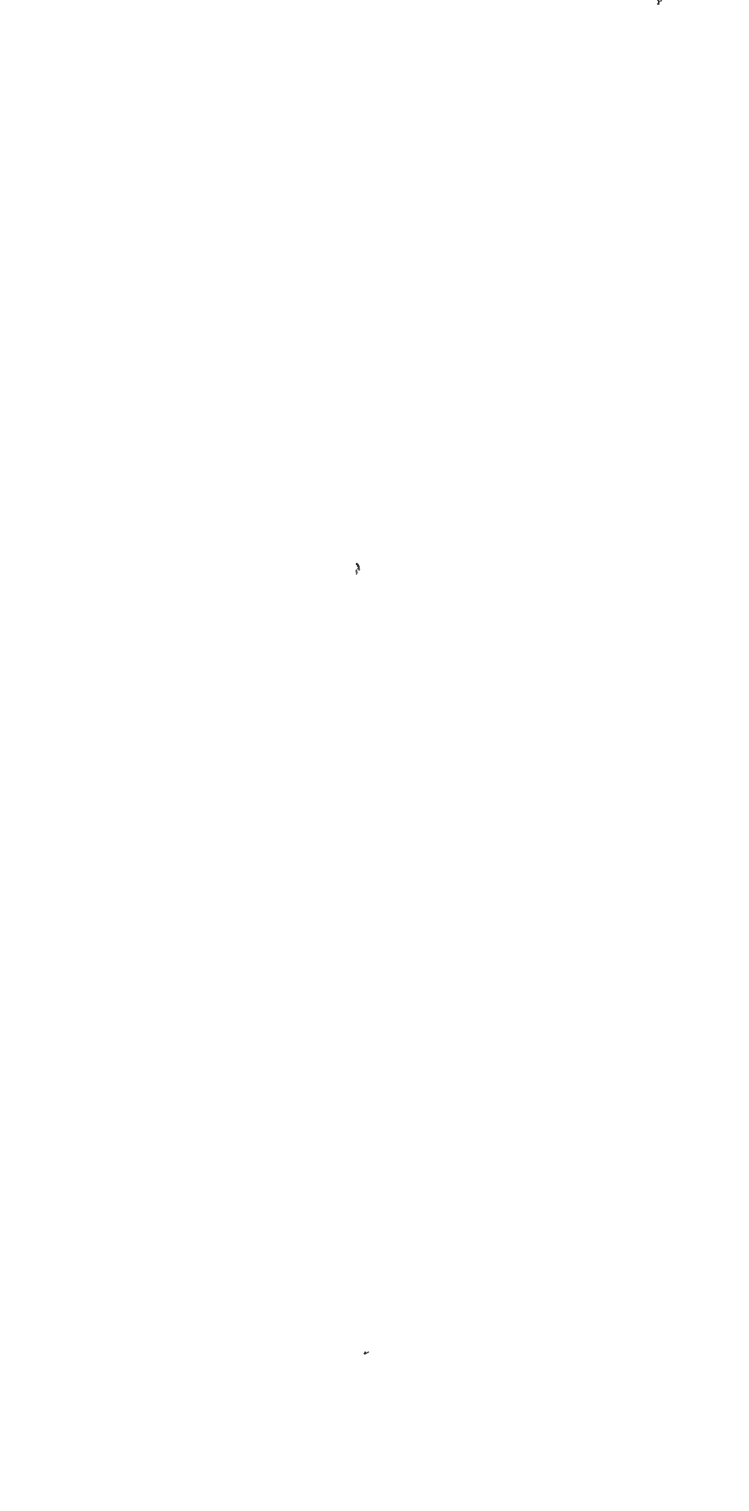
५. १०० गीतमें के पुस्तकमें लिखी हुई है न-
 ६. १०० गीतमें बनाने किमर्थों के सो या-
 ७. लिखना.

८. १०० गीतमें ७ इनमें दस मयाणों नाम
 ९. १०० गीत में नानका मायुजीका अर्थ है.
 १०. १०० गीत में मायुजीका अर्थ ७७ टोलेवाजाने पुस्तक
 में नमाना है और अर्थ ७७ टोलेके अर्थ, धारण
 ११. धारण मय कर्तवी गीतमें कहे है मुनका
 १२. धारण मय कर्तवी गीतमें कहे है मुनका
 १३. १०० गीत में मायुजीका अर्थ धारण कर
 १४. १०० गीत में मायुजीका अर्थ धारण कर
 १५. १०० गीत में मायुजीका अर्थ धारण कर
 १६. १०० गीत में मायुजीका अर्थ धारण कर
 १७. १०० गीत में मायुजीका अर्थ धारण कर
 १८. १०० गीत में मायुजीका अर्थ धारण कर
 १९. १०० गीत में मायुजीका अर्थ धारण कर
 २०. १०० गीत में मायुजीका अर्थ धारण कर

मन्त्रों को मन्त्रों नसी जाती वान नयाँकि सुयोदय होता है
 नव मने लोचनी प्राणों: गोना है पंम्बु चुन्दुकी न्यागां नं
 गोयनी है ऐसे जो ना जग्य प्राणी है और जिमकों मया
 मन्त्रों विणेष करने की चाह है उन प्राणीयांकों तो यह
 पंम्बु गानकर मालुम होजायगाकि यह सब है और यह
 जग्य है और जिमकों चाह नहीं है उनोंके वास्ते हम
 कुञ्जी त्रिग नहीं गक्ते है. इत्यलम् विस्तरण मंत्र
 १९४७ प्रथम चाडमागे कृशपदं त्रयोदश्यां तिथौ
 बुधरागरे ॥

श्याचार्याष्टाधिकमहस्रश्रियायुक्ता श्रीमद्विजया-
 नंदमुरीश्वरस्यापरनाम्ना श्रीमदात्माराममहामु
 नेर्जंष्टशिष्यः श्रीमल्लक्ष्मीविजयः तत्रिष्यः
 श्रीमध्वर्षविजयः तल्लयुशिष्येनवल्लजा
 रुयमुनिनाकृताः गप्पदीपिकासमीर
 नाम्नाग्रंथः ॥





— — — — —
— — — — —
— — — — —

